सांध्य दैनिक 4PM

अगर आप किसी की खुशियां लिखने वाली पेंसिल नहीं हो सकते हैं तो एक अच्छा सा इरेजर बनिए जो उनका दुख मिटा सकें।

–ब्रह्माकुमारी शिवानी

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 12 ● अंक 217 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, सोमवार 13 सितम्बर, 2026

भारत ने 8वीं बार जीता महिला एशिया... 7 | बंगाल में उपचुनाव में निशाने पर... 3 | भाजपा काल में हुए निर्माण से दूर... 2

‘सहिया’ की लड़ाई अब अदालत में, हार नहीं मानूंगा : संजय शर्मा

» कपिल सिब्बल ने फिल्म देखी बोले- तिनका बराबर भी ऐसा कुछ नहीं जिसे रोकने का आधार बने

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। हार नहीं मानूंगा... काल के कपाट पर नये गीत लिखता जाऊंगा। पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपेयी की यह पंक्ति सिर्फ कविता नहीं है यह उस जिद का ऐलान है कि रास्ते में कितनी ही दीवारें खड़ी हों कितने दरवाजे बंद कर दिए जाएं और कितने ही ताकतवर लोग सामने हो हार नहीं माननी है। सहिया फिल्म के निर्माता निर्देशक संजय शर्मा ने भी हार मानने के बजाय अगली जंग की तैयारी शुरू कर दी है।

फिल्म को सेंसर बोर्ड द्वारा रोके जाने के बाद अब लड़ाई अदालत की चौखट पर होगी और इस लड़ाई में संजय शर्मा की पैरवी देश के जाने माने अधिवक्ता और पूर्व केंद्रीय कानून मंत्री कपिल सिब्बल करेंगे। यानी सहिया की अगली लड़ाई अब सिर्फ एक फिल्म के रिलीज सार्टिफिकेट तक सीमित नहीं रह गयी है। मामला अब उस बड़े सवाल तक पहुंच गया है कि किसी क्रिएटिव फिल्म के रिलीज की प्रक्रिया कितनी पारदर्शी होनी चाहिए और क्या किसी फिल्म को ऐसे आधार पर रोका जा सकता है जिसे कानून और निर्धारित नियमों की कसौटी पर ठहराया ही न जा सके।

सामने मोगेम्बो हो या फिर बाप जी, डरना नहीं है झुकना नहीं है

फिल्म मेकर संजय शर्मा के सामने रास्ता आसान नहीं है। एक ओर प्रमाणन की प्रक्रिया से जुड़ा विवाद है तो दूसरी ओर अब अदालत का रास्ता खुल रहा है। सामने संस्थागत ताकत है लंबी कानूनी प्रक्रिया है और स्वाभाविक तौर पर वह दबाव भी है जिसके आगे बहुत से लोग बीच रास्ते में कदम पीछे खींच लेते हैं। लेकिन संजय शर्मा ने ऐसा करने के बजाय कानूनी लड़ाई लड़ने का फैसला किया है। उनका रुख साफ है मामला सिर्फ सहिया का नहीं उस अधिकार का भी है जिसके तहत एक निर्माता अपनी बात को नियमों और कानून के दायरे में दर्शकों तक पहुंचा सके। उनका मानना है कि सामने मोगेम्बे हो या बाप जी संजय शर्मा पीछे हटने को तैयार नहीं हैं। उनके लिए यह लड़ाई किसी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा की लड़ाई से कहीं आगे बढ़ चुकी है। सवाल यह है कि अगर किसी फिल्म में आपत्तिजनक सामग्री नहीं है तो उसके प्रमाणन में अड़चन क्यों और किस आधार पर? और अगर आपत्ति है तो उसके पीछे स्पष्ट कानूनी और तथ्यात्मक आधार क्या है?

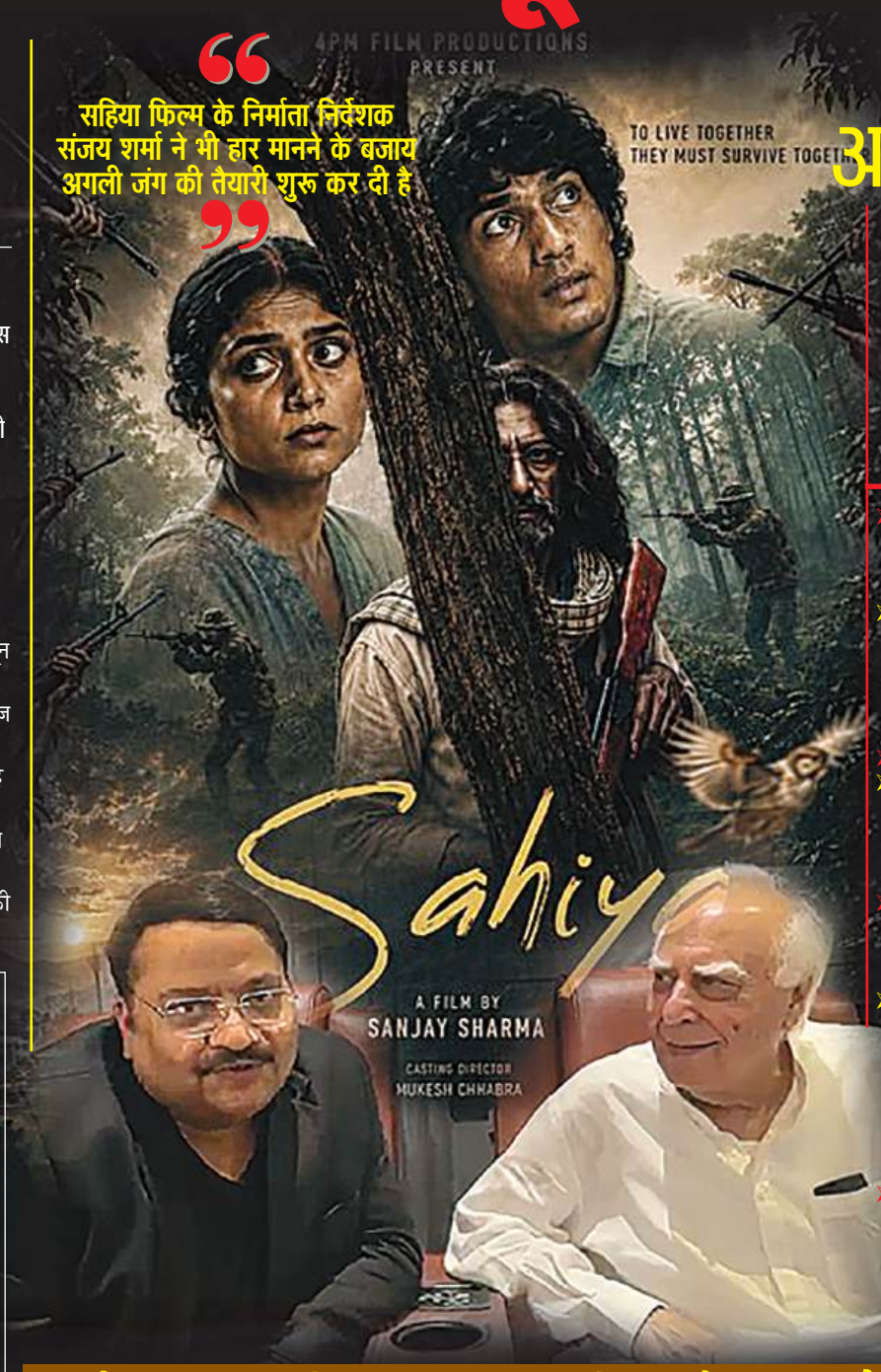

“सहिया फिल्म के निर्माता निर्देशक संजय शर्मा ने भी हार मानने के बजाय अगली जंग की तैयारी शुरू कर दी है”

इसी का जवाब अब अदालत में मांगा जाएगा

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि संजय शर्मा ने इस लड़ाई को भावनाओं या आरोपों तक सीमित रखने के बजाय कानून के रास्ते पर ले जाने का फैसला किया है। देश के वरिष्ठ अधिवक्ता और पूर्व केंद्रीय कानून मंत्री कपिल सिब्बल का फिल्म देखने के बाद यह कहना कि उन्हें इसमें ऐसा कुछ नजर नहीं आया जिसके आधार पर उसे सेंसर किया जाना उचित हो इस पूरे विवाद को एक नया संदर्भ देता है। अब अगला कदम अदालत का है। वहां बहस होगी दस्तावेज सामने आएंगे और तय होगा कि सहिया के प्रमाणन को लेकर उठे सवालों का कानूनी आधार कितना मजबूत है। संजय शर्मा के लिए रास्ता लंबा हो सकता है लेकिन रुख स्पष्ट है कि लड़ाई से पीछे नहीं हटना है। सहिया की अगली लड़ाई अब अदालत में होगी और इस बार फैसला तर्क दस्तावेज और कानून की कसौटी पर मांगा जाएगा। सहिया देखकर कपिल सिब्बल बोले डरने की जरूरत नहीं फिल्म में ऐसा कुछ नहीं जिसे रोका जाए।

- संजय शर्मा – कपिल सिब्बल साहब आपने फिल्म देखी। सबसे पहले आपका शुक्रिया। वक्त निकालकर फिल्म देखी यह मेरे लिए बड़ी बात है।
- कपिल सिब्बल – शुक्रिया की कोई जरूरत नहीं। बहुत दिनों बाद एक उम्दा फिल्म देखने को मिली और अच्छी बात यह कि इसके लिए थिएटर जाने की जरूरत नहीं पड़ी। आपने घर बैठे मुझे एक अच्छी फिल्म देखने का मौका दे दिया।
- संजय शर्मा – कैसी लगी फिल्म?
- कपिल सिब्बल – बहुत अच्छी। मुझे फिल्म काफी पसंद आयी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मुझे इसमें ऐसी कोई चीज दिखाई नहीं दी जो फिल्म के प्रमाणन में रुकावट का आधार बन सके।
- संजय शर्मा – मैं सच कहूं तो फिल्म बनाते समय मुझे अंदाजा नहीं था कि इसे लेकर इतना विवाद खड़ा हो सकता है। आप फिल्म देखते हुए क्या सोच रहे थे?
- कपिल सिब्बल – मैं फिल्म देख रहा था और यही सोच रहा था कि आखिर इसमें ऐसा क्या है जिसे लेकर किसी को डर हो सकता है। फिल्म अपनी बात कहती है कहानी कहती है भावनाएं सामने रखती है। लेकिन ऐसा कुछ नजर नहीं आया जिसे देखकर यह कहा जाए कि इसे रोकना जरूरी है।
- संजय शर्मा – आप खुद भी गानों से जुड़े रहे हैं। गीत लिखे हैं संगीत और फिल्म इंडस्ट्री से आपका पुराना रिश्ता रहा है। समीर अंजान साहब ने मुझे बताया कि आज गीतकारों और संगीत से जुड़े लोगों को अपने अधिकारों का लाभ मिल रहा है तो उसके पीछे आपकी कोशिशों का भी योगदान है। आपने इस संबंध में संसद में कोई विधेयक भी लाया था?
- कपिल सिब्बल – हां फिल्म और संगीत उद्योग से जुड़े लोगों के अधिकारों को लेकर संसद में विधायी पहल हुई थी। इंडस्ट्री बहुत बड़ी है लेकिन इसके पीछे काम करने वाले गीतकार संगीतकार और दूसरे रचनात्मक लोग भी अपने अधिकारों के हकदार हैं। रचनाकार को उसका अधिकार मिलना चाहिए।
- संजय शर्मा – लेकिन आज सबसे बड़ी समस्या यही है कि रचनाकार अपनी बात लेकर कहां जाए? फिल्म की स्क्रीनिंग से पहले फोन रखवा लिए जाते हैं। निर्माता को इस तरह माहौल में फिल्म दिखाई जाती है जैसे वह कोई अपराध करने आया हो। मेरे साथ भी ऐसी स्थिति बनी। यहां तक कहा गया कि अगर यही फिल्म उत्तर प्रदेश में बनायी गई होती तो कोई समस्या नहीं होती। आखिर ऐसी बात क्यों कही जाती है?
- कपिल सिब्बल – आपको डरने की जरूरत नहीं है। फिल्म मैंने देखी है। मुझे इसमें ऐसा कुछ नहीं लगा जिसे लेकर आपको भयभीत होने की जरूरत हो। अगर कोई सवाल है तो उसका जवाब कानून के दायरे में होना चाहिए।
- संजय शर्मा – अभिव्यक्ति को रोका जा रहा है?
- कपिल सिब्बल – बीजेपी के शासन में ऐसा बहुत हो रहा है बहुत शिकायते सुनने को मिल रही है । लेकिन अच्छी बात यह है कि काकरोचों ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया है इस देश का युवा इस बात को समझ चुका है देश का महौल बदलेगा।

निर्माता पक्ष का सबसे बड़ा सवाल इसी आदेश पर है

उनका कहना है कि अगर फिल्म इतनी गंभीर संवैधानिक सीमाओं का उल्लंघन करती है तो बोर्ड को यह स्पष्ट करना चाहिए कि कौन सा दृश्य, कौन सा संवाद और फिल्म का कौन सा हिस्सा ऐसा करता है। कानूनी तैयारी में भी यही एक प्रमुख मुद्दा है कि बोर्ड के आदेश में किसी विशिष्ट दृश्य, संवाद, विजुअल या टाइम-कोड को उन गंभीर निष्कर्षों से स्पष्ट रूप से नहीं जोड़ा गया।

पहले पूरी फिल्म ही कर दी गई थी खारिज

‘सहिया’ को लेकर विवाद तब शुरू हुआ जब सेंसर बोर्ड की रिवाइजिंग कमेटी ने 27 अगस्त 26 को फिल्म को प्रमाणपत्र देने से इनकार कर दिया। बोर्ड के आदेश में प्रमाणन दिशानिर्देशों के गंभीर प्रावधानों का उल्लेख किया गया। बोर्ड ने आशंका जताई कि फिल्म का कथानक सशस्त्र विद्रोह को महिमामंडित या रोमांटिक कर सकता है, राज्य और सुरक्षा एजेंसियों के प्रति असंतोष पैदा कर सकता है और आदिवासी समुदाय को राज्य-विरोधी रूप में प्रस्तुत कर सकता है।

23 अगस्त को अंतिम प्रत्यावेदन, उसके बाद भी इंतजार

अब एक और बड़ा सवाल सेंसर बोर्ड की प्रक्रिया और देरी को लेकर खड़ा हो गया है। फिल्म देखने के बाद 23 अगस्त को अंतिम प्रत्यावेदन सेंसर बोर्ड के समक्ष दिया गया। निर्माता पक्ष का कहना है कि लागू प्रक्रिया के अनुसार इस प्रत्यावेदन पर पांच दिन के भीतर विचार कर अपना मत दिया जाना चाहिए था। लेकिन 23 अगस्त के बाद आज 14 सितंबर तक 22 दिन गुजर चुके हैं। अगर पांच दिन की अपेक्षित समय-सीमा पूरी होने के बाद की देरी को देखें तो भी करीब 17-18 दिन अतिरिक्त गुजर चुके हैं। निर्माता पक्ष का आरोप है कि इतने समय बाद भी सेंसर बोर्ड की तरफ से यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि फिल्म को पुनः देखा गया है या नहीं, अंतिम प्रत्यावेदन पर क्या विचार हुआ और आगे बोर्ड का निर्णय क्या है। यानी सवाल अब सिर्फ फिल्म को रोकने का नहीं है, बल्कि उस प्रक्रिया का भी है जिसके जरिए एक फिल्म निर्माता को अपने काम पर अंतिम निर्णय पाने का अधिकार मिलता है। संबंधित खबर पेज 8 पर

भाजपा काल में हुए निर्माण से दूर रहना चाहती है जनता : अखिलेश

सपा प्रमुख बोले- बीजेपी सरकार में निर्माण की दुर्गति के पीछे कमीशनखोरी जिम्मेदार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव का भाजपा सरकार पर हमला जारी है। सपा प्रमुख ने कहा कि बीजेपी में भ्रष्टाचार का हाल यह है कि अगर लोगों को पता चल जाए कि यह निर्माण भाजपाकाल में हुआ है तो जनता छतरी और द्वार के नीचे जनता खड़ी नहीं होती है।

सपा अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने करोड़ों की जो धनराशि गोरखपुर के राजघाट के निर्माण के लिए निकाली थी, उसमें से सिंचाई विभाग ने भाजपा नेताओं के साथ मिलकर भ्रष्टाचार के खेत सींच लिए हैं। निर्माण की इस दुर्गति के पीछे कमीशनखोरी ही जिम्मेदार है, जिसने दो अधिवक्ताओं की असामयिक जान ले ली है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार में भ्रष्टाचार का हाल यह है कि अगर लोगों को पता चल जाए कि यह निर्माण भाजपाकाल में हुआ है तो जनता छतरी और द्वार के नीचे जनता खड़ी नहीं होती है। जनता पानी की टंकी देखकर दूर भागती है। भाजपाकाल में निर्मित सड़क, हाईवे और एक्सप्रेस-वे पर नहीं चलती है।

कक्षा-1 की छात्रा को दी दो लाख की मदद

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने शनिवार को बलिया की बच्ची रागिनी राजभर से मुलाकात की। सपा अध्यक्ष ने बच्ची के पैर के इलाज के लिए समुचित चिकित्सकीय सहायता के अलावा उसे 2 लाख रुपये की मदद भी दी। उसकी पढ़ाई अब बांसडीह, बलिया के बीएन इंटर नेशनल स्कूल में होगी। कक्षा एक की छात्रा रागिनी राजभर दुर्घटना में एक पैर में फैक्चर होने के बावजूद पढ़ाई के लिए रोजाना 400 मीटर दूर एक पैर से स्कूल कूद-कूद कर जाती है।

भाजपा वालों के भाषण सुनने के मूड में नहीं है जनता

अखिलेश यादव ने जारी बयान में कहा कि इधर भाजपा सरकार में ये देखा जा रहा है कि मृतकों के परिजनों के घाव पर नमक छिड़कने का काम लगातार किया जा रहा है। भाजपा नेता याद रखें अब जनता न तो भाजपा वालों के भाषण सुनने के मूड में है, न उनके बयान। निर्माण में संलिप्त अधिकारियों व गैरजिम्मेदार बयानबाजी पर अगर अधिकारियों का निलंबन नहीं हुआ तो माना जाएगा कि वे अपने मुखिया और सांसद के कहने पर ऐसा भ्रष्ट काम कर रहे हैं।

भारत-चीन सीमा विवाद का जल्द समाधान होना चाहिए : मायावती

» बसपा प्रमुख ने उनको बीमार बताने वालों को लताड़ा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) प्रमुख मायावती ने ब्रिक्स शिखर सम्मेलन, पार्टी संगठन को लेकर हो रही राजनीति पर बयान दिया। इस दौरान बसपा चीफ ने अपने भतीजे आकाश आनंद पर बड़ा हमला बोला है। पूर्व सीएम मायावती ने कहा हाल में उनके द्वारा लिए गए कड़े फैसलों से पार्टी को फायदा ही हुआ है, नुकसान नहीं, उन्होंने कहा कि पार्टी से निकाले गए कुछ लोगों ने पिछले एक-दो दिनों से कार्यकर्ताओं के बीच यह भ्रम फैलाया है कि वह बीमार चल रही हैं।

मायावती ने दावा किया कि उनके आवास पर पार्टी इंचार्ज आलोक कुमार के पास शनिवार रात 10 बजकर 4 मिनट पर आकाश आनंद का फोन आया था। उन्होंने कथित तौर पर पूछा कि क्या मायावती बीमार चल रही हैं। मायावती ने ब्रिक्स में 140 पैराग्राफ वाले दिल्ली घोषणापत्र को सर्वसम्मति से अपनाए जाने को बड़ी कूटनीतिक उपलब्धि बताया। मायावती ने कहा कि इसमें फिलिस्तीन के लिए दो-देश समाधान और 1967 की सीमाओं पर आधारित स्वतंत्र फिलिस्तीनी राष्ट्र के समर्थन को जगह मिली है। मायावती ने कहा कि पहलगाम आतंकी हमले का जिक्र करते हुए आतंकवाद से हर संभव तरीके से निपटने की प्रतिबद्धता जताई गई है। उन्होंने कहा कि इससे भारत के दृष्टिकोण को उचित स्थान मिला है और यह तारीफ के काबिल है।

वहीं भारत-चीन सीमा विवाद पर मायावती ने कहा कि दोनों देशों के बीच सीमा का मुद्दा जितनी जल्दी हल हो जाए, उतना ही अच्छा होगा। मायावती ने कहा कि आलोक कुमार ने जवाब दिया कि वह ठीक हैं और अपना काम कर रही हैं। मायावती ने कहा कि इसके बाद आकाश आनंद ने कथित तौर पर कहा कि यह बात बहनजी को नहीं बताना। यह गंभीरता से सोचने वाली बात है, आकाश आनंद की यह मानसिकता सही भी हो सकती है और गलत भी।

विनोद साहनी हत्याकांड मामले में आजाद समाज पार्टी मुखर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बाराबंकी। गोंडा के विनोद साहनी हत्याकांड को लेकर रविवार को बाराबंकी के रामनगर में उस समय सियासी हलचल तेज हो गई, जब पीड़ित परिवार से मुलाकात करने जा रहे आजाद समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और सांसद चंद्रशेखर आजाद को पुलिस ने रोक दिया। उनके साथ भीम आर्मी के कार्यकर्ता और अन्य समर्थक भी मौजूद थे। चंद्रशेखर आजाद के गोंडा जाने की सूचना के बाद रामनगर में बाराबंकी और गोंडा पुलिस के आला अधिकारी भारी पुलिस फोर्स के साथ मौके पर पहुंच गए।

» चंद्रशेखर आजाद को पुलिस ने रोका, हंगामा

पुलिस ने उन्हें आगे जाने से रोक दिया। इस दौरान चंद्रशेखर आजाद और उनके समर्थकों की पुलिस अधिकारियों से तीखी बहस हो गई। रोकने के दौरान पुलिस और कार्यकर्ताओं के बीच धक्कामुक्की भी हुई। मौके पर काफी देर तक हंगामे की स्थिति बनी रही। कार्यकर्ताओं ने पुलिस पर बलपूर्वक रोकने और लाठीचार्ज करने का आरोप लगाया। हालांकि, पुलिस की ओर से कार्रवाई को लेकर आधिकारिक तौर पर विस्तृत जानकारी सामने आना बाकी है। बताया जा रहा है कि चंद्रशेखर आजाद गोंडा में हुई विनोद साहनी की हत्या के बाद पीड़ित परिवार से मुलाकात करने जा रहे थे। इसी दौरान बाराबंकी के रामनगर क्षेत्र में पुलिस ने उन्हें रोक लिया। इस दौरान चंद्रशेखर आजाद ने भी कई आरोप मढ़े है। मौके पर गोंडा और बाराबंकी पुलिस के अधिकारियों के बीच भी बातचीत और तीखी बहस की स्थिति दिखाई दी। पुलिस कार्रवाई के बाद समर्थकों में नाराजगी बढ़ गई और मौके पर जमकर हंगामा हुआ। विनोद साहनी हत्याकांड को लेकर पहले से ही राजनीतिक गतिविधियां तेज हैं।

विस चुनाव से पहले सोनभद्र में अनुप्रिया पटेल का शक्ति प्रदर्शन, 2 सीटों पर नजर

» एनडीए गठबंधन की राजनीति गरमाने लगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सोनभद्र। सोनभद्र में अपना दल के जिला स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन में केंद्रीय राज्य मंत्री और पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल ने शिरकत की. कार्यकर्ता सम्मेलन में संगठन को मजबूत करने से लेकर आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों तक कई मुद्दों पर चर्चा हुई. राजनीतिक रूप से यह सम्मेलन इसलिए भी अहम है, क्योंकि भाजपा और अपना दल गठबंधन के सहयोगी हैं और 27 का विधानसभा चुनाव अब बहुत दूर नहीं है।

अगर पिछले विधानसभा चुनावों की बात करें तो 17 में भाजपा गठबंधन के तहत अपना दल को दुद्धी विधानसभा सीट मिली थी, लेकिन 22 के विधानसभा चुनाव में सोनभद्र की किसी भी विधानसभा सीट पर अपना दल को टिकट नहीं मिला। अब 2027 से पहले अपना दल सोनभद्र में अपनी राजनीतिक मौजूदगी और संगठनात्मक ताकत दिखाने की कोशिश कर रहा है। अनुप्रिया पटेल की ओर से जिले की दो विधानसभा सीटों

पर दावेदारी की चर्चा भी इस राजनीतिक गतिविधि को और महत्वपूर्ण बना रही है। अनुप्रिया पटेल ने कहा, आज हमारी राजनीतिक ताकत सीमित है, लेकिन सीमित राजनीतिक ताकत के बावजूद हमने सरकार से कई महत्वपूर्ण फैसले कराने का काम किया है।

लोकसभा के 543 सांसदों में अपना दल का एक सांसद है, लेकिन हमारी आवाज सरकार तक पहुंचती है और हम अपने मुद्दों को मजबूती से उठाते हैं।। अनुप्रिया पटेल ने कार्यकर्ताओं को संगठन मजबूत करने का मंत्र भी दिया। उन्होंने कहा कि विधानसभा और संसद में राजनीतिक ताकत तभी बढ़ेगी, जब बूथ स्तर पर संगठन मजबूत होगा। उन्होंने 403 विधानसभा क्षेत्रों का जिक्र करते हुए कार्यकर्ताओं से पार्टी की सदस्य संख्या और संगठन को बढ़ाने का आह्वान किया।

संबोधन में उठाया आरक्षण का मुद्दा

अपने संबोधन में अनुप्रिया पटेल ने आउटसोर्सिंग में आरक्षण के मुद्दे को भी जोरदार तरीके से उठाया. उन्होंने कहा कि अपना दल ने गठबंधन के भीतर रहते हुए आउटसोर्सिंग की नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था लागू कराने का मुद्दा मजबूती से उठाया. साथ ही उन्होंने समाजवादी पार्टी पर निशाना साधते हुए सवाल किया कि जब सपा सत्ता में थी, तब आउटसोर्सिंग व्यवस्था को खत्म क्यों नहीं किया गया। उन्होंने कहा,आज बड़ी-बड़ी पार्टियां कह रही हैं कि सत्ता में आएंगे तो आउटसोर्सिंग खत्म कर देंगे, मैं उनसे पूछना चाहती हूं कि जब आपकी सरकार थी, तब आपने इसे खत्म क्यों नहीं किया? जनता को भ्रमित करने वाली बातों से सावधान रहने की जरूरत है नीट में आरक्षण के मुद्दे को लेकर भी अनुप्रिया पटेल ने विपक्ष पर हमला बोला।

आतंकवाद के साथ धर्म को न जोड़ा जाए : मसूद

» चीन से बेहतर संबंध से अमेरिकी दादागिरी से बचाव होगा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सहारनपुर। भारत इस बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में ब्रिक्स समिट की अगुवाई कर रहा है। इस बीच पक्ष-विपक्ष की ओर से लगातार प्रतिक्रियाओं का दौर जारी है। कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने भी इस पर बड़ा बयान दिया है।

कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने कहा, उन्होंने कहा है कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता तो यह सब

लोगों को समझना चाहिए कि आतंकवाद के साथ धर्म को नहीं जोड़ा जाना चाहिए मसूद ने आगे कहा ब्रिक्स बड़ा मंच है और नया वर्ल्ड ऑर्डर मे ब्रिक्स की महत्वपूर्ण भूमिका है और ब्रिक्स में हमारी बहुत बड़ी भूमिका है। इमरान मसूद का कहना है हमारे और चीन के जो कॉन्फ्लिक्ट है उनका हल किया जाना जरूरी है, क्योंकि चीन के साथ ट्रेड हो तो चीन हमारी संप्रभुता पर हमला न करें ब्रिक्स मजबूत होगा तो अमेरिका की दादागिरी कमजोर होगी। मसूद ने आगे यह भी कहा, हमारा जो पिछले दिनों अमेरिका की तरफ झुकाव था उसकी वजह से हमें नुकसान हुआ, अब अच्छा है कि इस पर कुछ मरहम लगे।

बहन जी कब क्या कर दें, उनका पता नहीं रहता

बीएसपी चीफ मायावती को लेकर कांग्रेस सांसद ने मजाकिया लहजे में कहा, बहन जी कब क्या कर दें, उनका पता नहीं रहता। वह एक बंद कमरे में बैठी रहती हैं और वहीं से तार हिलाती रहती हैं। बसपा एक कमरे में चलती है वह किसी को इधर बिठाएंगे किसी को उधर से लाएंगे।

बंगाल में उपचुनाव में निशाने पर सियासी दांव

भाजपा और टीएमसी ने कसी कमर

बागी टीएमसी गुट ममता के लिए सीट छोड़ने की तैयारी में

» 21 में नंदीग्राम में पूर्व सीएम बनर्जी को अपने करियर का सबसे बड़ा चुनावी झटका लगा था

» चुनाव चिन्ह को लेकर दोनों गुट चुनाव आयोग जाएंगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में उपचुनाव होने वाले हैं। इसलिए वहां की सियासत गरमाई है। भाजपा व टीएमसी एक दूसरे पर बयानों के तीर छोड़ रहे हैं। वहीं पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस के बागी गुट ने पार्टी प्रमुख ममता बनर्जी को नंदीग्राम विधानसभा उपचुनाव लड़ने का न्योता दिया है। बागी नेताओं ने वादा किया है कि यदि वे चुनाव मैदान में उतरती हैं तो उनके खिलाफ कोई उम्मीदवार नहीं खड़ा किया जाएगा। प्रवक्ताओं के अनुसार इस फैसले का उद्देश्य भाजपा-विरोधी मतों के विभाजन को रोकना है।

कोलकाता, नौ सितंबर तृणमूल कांग्रेस के नाम और चुनाव चिह्न के लिए जारी लड़ाई अब नंदीग्राम उपचुनाव तक पहुंच गई है। बागी गुट ने पार्टी प्रमुख ममता बनर्जी से वहां से चुनाव लड़ने को कहा है और वादा किया है कि वे उनके खिलाफ कोई उम्मीदवार नहीं उतारेंगे। सार्वजनिक रूप से दिया गया यह प्रस्ताव एक अपील भी है और एक चुनौती भी। 21 में नंदीग्राम में बनर्जी को अपने करियर का सबसे बड़ा चुनावी झटका लगा था, उन्होंने इस सीट को भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ अपने अभियान का मुख्य केंद्र बनाया था, लेकिन वह अपने ही पूर्व सहयोगी और भाजपा उम्मीदवार शुभेंदु अधिकारी से हार गईं। इसके अलावा, टीएमसी का बागी गुट अपनी चुनावी साख साबित करने की होड़ में लगा है, जबकि पार्टी के नाम और 'घास पर दो फूल' वाले चुनाव चिह्न पर उसका दावा अब भी निर्वाचन आयोग के पास लंबित हैं।

ममता बनर्जी नंदीग्राम से चुनाव लड़ती हैं, तो हम अपना कोई उम्मीदवार नहीं उतारेंगे : मित्रा

टीएमसी के एक और बागी विधायक मदन मित्रा ने कहा कि इस फैसले का मकसद भाजपा-विरोधी वोट के बंटवारे को रोकना और बनर्जी को नंदीग्राम में आसानी से जीत दिलाना था। मित्रा ने कहा, अगर ममता बनर्जी नंदीग्राम से चुनाव लड़ती हैं, तो हम अपना कोई उम्मीदवार नहीं उतारेंगे। इससे यह साबित होगा कि हमने भाजपा को विपक्ष के वोट बांटने का मौका नहीं दिया है। उन्होंने यह बात उस आरोप के संदर्भ में कही जिसमें बागी गुट को सत्तारूढ़ दल की 'बी-टीम' बताया जा रहा है। यह प्रस्ताव ऐसे समय में आया है जब टीएमसी के दो प्रतिद्वंद्वी गुट नंदीग्राम और रेजीनगर में छह अक्टूबर को होने वाले उपचुनाव की तैयारी कर रहे हैं, जबकि निर्वाचन आयोग ने अब तक यह तय नहीं किया है कि पार्टी के मान्यता प्राप्त नाम और चुनाव चिह्न पर किस गुट का हक है।

भाजपा ने बनाई 263 सदस्यीय कार्यसमिति

पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी ने आगामी विधानसभा उपचुनावों से पहले 263 सदस्यीय नई प्रदेश कार्यसमिति का गठन किया है और मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी समेत कई वरिष्ठ नेताओं को विभिन्न संगठनात्मक जिलों की जिम्मेदारी सौंपी है। शुभेंदु को तामलुक संगठनात्मक जिले का प्रभारी बनाया गया है। इस संगठनात्मक जिले के अंतर्गत राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण नंदीग्राम विधानसभा क्षेत्र आता है, जहां छह अक्टूबर को उपचुनाव होना है। नंदीग्राम के अलावा मुर्शिदाबाद जिले की रेजिनगर विधानसभा सीट पर भी उपचुनाव होगा। समिक भट्टाचार्य के भाजपा प्रदेश अध्यक्ष का पदभार संभालने के बाद से राज्य की नई कार्यसमिति का गठन एक साल से अधिक समय से लंबित था। नवगठित समिति में शुभेंदु के पिता एवं तामलुक के पूर्व सांसद शिशिर अधिकारी, केंद्रीय मंत्रियों सुकांत मजूमदार तथा शांतनु ठाकुर के अलावा राज्य के कई मंत्री और पार्टी के वरिष्ठ नेताओं को जगह दी गई है। शिशिर अधिकारी को कांथि संगठनात्मक जिले की जिम्मेदारी दी गई है, जबकि मजूमदार को दक्षिण दिनाजपुर और ठाकुर को वनगांव संगठनात्मक जिले का प्रभारी बनाया गया है। राज्य के मंत्रियों में तापस रॉय को उत्तर कोलकाता, जगन्नाथ चट्टोपाध्याय को बीरभूम, निशित प्रमाणिक को कूचबिहार और शंकर घोष को सिलीगुड़ी संगठनात्मक जिले की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

बागी गुट ने पहले निर्वाचन आयोग से संपर्क करके पार्टी के नाम, वित्तीय संपत्ति और 'घास पर दो फूल' चुनाव चिह्न पर अपना दावा पेश किया था

बागी गुट ने पहले निर्वाचन आयोग से संपर्क करके पार्टी के नाम, वित्तीय संपत्ति और 'घास पर दो फूल' चुनाव चिह्न पर अपना दावा पेश किया था। गुट ने कहा कि वह तृणमूल कांग्रेस के नाम और चुनाव चिह्न का इस्तेमाल करके आगामी उपचुनाव लड़ेगा, साथ ही अगर निर्वाचन आयोग 16 सितंबर को नामांकन प्रक्रिया खत्म होने से पहले उसके दावे को मान्यता नहीं देता है तो उसके उम्मीदवार निर्दलीय के तौर पर चुनाव लड़ने के लिए भी तैयार हैं। बागी गुट को भेजे निर्वाचन आयोग के पत्र में कहा गया, आयोग ने आपके पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल को 12.09.2026 (शनिवार) को पूर्वाह्न 11 बजे इंडिया इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डेमोक्रेसी एंड इलेक्शन मैनेजमेंट (आईआईआईडीईएम), सेक्टर-13, द्वारका, दिल्ली में बैठक के लिए समय देने का फैसला किया था।'' यह घटनाक्रम ऐसे समय में हुआ है जब तृणमूल कांग्रेस के दोनों प्रतिद्वंद्वी गुटों ने घोषणा की है कि वे उपचुनाव के लिए उम्मीदवार उतारेंगे।

हम चाहते हैं कि वह चुनाव लड़ें, जीतें और विधानसभा लौटे : रिजु दत्ता

पश्चिम बंगाल विधानसभा के बाहर बागी टीएमसी गुट के प्रवक्ता रिजु दत्ता ने कहा, अगर ममता बनर्जी नंदीग्राम से चुनाव लड़ती हैं, तो हम अपना उम्मीदवार नहीं उतारेंगे। हम चाहते हैं कि वह चुनाव लड़ें, जीतें और विधानसभा लौटें। इस साल हुए विधानसभा चुनावों में, अधिकारी ने नंदीग्राम से जीत हासिल की और साथ ही बनर्जी को उनके गढ़ भवानीपुर में भी हराया। उन्होंने भवानीपुर की सीट अपने पास रखी और दूसरी सीट छोड़ दी, जिससे उपचुनाव की जरूरत पड़ी।

टीएमसी चुनाव चिह्न और नाम विवाद पर दोनों गुट दिल्ली जाएंगे

विधानसभा उपचुनाव से पहले निर्वाचन आयोग ने तृणमूल कांग्रेस के दोनों प्रतिद्वंद्वी गुटों को अलग-अलग बैठक के लिए दिल्ली आमंत्रित किया है। आयोग ने विपक्ष के नेता ऋतब्रत बनर्जी के पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल को सुबह 11 बजे और पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के गुट को दोपहर 12 बजे का समय दिया है। यह विवाद छह अक्टूबर को नंदीग्राम और रेजीनगर में होने वाले उपचुनावों से पहले पार्टी नाम व चुनाव चिह्न पर दावे को लेकर है।

कोलकाता, नौ सितंबर तृणमूल कांग्रेस पार्टी पर नियंत्रण, नाम, संपत्ति और चुनाव चिह्न को लेकर जारी विवाद के बीच निर्वाचन आयोग ने बुधवार को तृणमूल कांग्रेस के दोनों गुटों को 12 सितंबर को नयी दिल्ली में अलग-अलग बैठकों के लिए बुलाया। निर्वाचन आयोग ने विधानसभा में विपक्ष के नेता ऋतब्रत बनर्जी को पत्र लिखकर पांच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल को पूर्वाह्न 11 बजे बैठक के लिए समय दिया है। निर्वाचन आयोग ने पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को भी पत्र लिखकर उनके गुट को इसके एक घंटे बाद बैठक का प्रस्ताव दिया। ये बैठकें छह अक्टूबर को नंदीग्राम और रेजीनगर में होने वाले विधानसभा उपचुनाव से पहले हो रही हैं। इन उपचुनाव के लिए बुधवार से नामांकन प्रक्रिया शुरू हो गई है। ऋतब्रत बनर्जी इस की शुरुआत में हुए विधानसभा चुनाव में निर्वाचित 80 तृणमूल विधायकों में से उन 60 बागी विधायकों के समूह का नेतृत्व करते हैं जिन्होंने इस साल की शुरुआत में हुए विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) से पार्टी की हार के बाद ममता बनर्जी का साथ छोड़ दिया था।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_SanjayS

गाल बजाना कब बंद करेंगी सरकारें

दक्षिण-पश्चिम दिल्ली के सत्य निकेतन में जो हृदयविदारक घटना घटित हुई है, वह केवल एक पांच मंजिला इमारत के भरभराकर गिरने की घटना नहीं बल्कि राजधानी की उस व्यवस्था का ढ़हना है, जिसकी नींव नागरिकों की सुरक्षा, कानून के शासन और प्रशासनिक जवाबदेही पर टिकी होनी चाहिए थी।

अभी कुछ महीने पहले लखनऊ में प्रशासनिक कमी व भ्रष्टाचार के चलते 15 होनहार लोग अग्निकांड में काल के गाल में समा गए थे। अभी उसकी चर्चा धूमिल भी नहीं हुई राजधानी दिल्ली में एक अवैध पीजी ने अपने मलबे में कई युवाओं को मिट्टी बना दिया। सरकारें इस बार भी गाल बजाती रहीं। जाने कब कुछ ठोस करेंगी जिससे उन माओं को तसल्ली मिले जिनके बच्चे अपना घर शहर गांव छोड़कर बड़े शहरों में अपने सपने पूरे करने के लिए पहुंचते है। पर वे कहीं न कहीं हादसों के शिकार हो जाते हैं। दक्षिण-पश्चिम दिल्ली के सत्य निकेतन में जो हृदयविदारक घटना घटित हुई है, वह केवल एक पांच मंजिला इमारत के भरभराकर गिरने की घटना नहीं बल्कि राजधानी की उस व्यवस्था का ढ़हना है, जिसकी नींव नागरिकों की सुरक्षा, कानून के शासन और प्रशासनिक जवाबदेही पर टिकी होनी चाहिए थी। जिस इमारत में कुछ घंटे पहले तक देश के अलग-अलग हिस्सों से आए युवा अपने भविष्य के सपने बुन रहे थे, देखते ही देखते वह ईंट, सीमेंट और लोहे के मलबे में बदल गई।

धूल का गुबार तो छंट जाएगा, मलबा भी हट जाएगा, सड़कें फिर सामान्य हो जाएंगी लेकिन उन परिवारों के जीवन में जो शून्य पैदा हुआ है, वह कभी नहीं भर सकेगा। 'हॉस्टल डेज' नामक लड़कों के लिए बने पीजी की इस पांच मंजिला इमारत में हादसे के वक्त कई छात्र अपने कमरों में थे, जिनके मलबे में दबे होने की आशंका है। बताया जा रहा है कि इमारत लगभग 40-50 वर्ष पुरानी थी और हादसे के समय बेसमेंट में मरम्मत तथा खुदाई का काम चल रहा था। यही तथ्य इस त्रासदी को और भयावह बना देता है। सवाल केवल यह नहीं है कि इमारत क्यों गिरी बल्कि असली सवाल यह है कि इतनी पुरानी और संवेदनशील इमारत में बेसमेंट की खुदाई और निर्माण संबंधी गतिविधियां आखिर चल कैसे रही थी? हर बड़े भवन हादसे के बाद एक ही कहानी दोहराई जाती है। प्रशासन कहता है कि जांच होगी, कुछ छोटे अधिकारियों पर कार्रवाई होती है और कुछ दिनों बाद पूरा मामला फाइलों के नीचे दब जाता है। फिर किसी दूसरे इलाके में कोई और इमारत गिरती है, कहीं आग लगती है, कोई बेसमेंट मौत का कुआं बन जाता है और हम फिर वही प्रश्न पूछते रह जाते हैं कि आखिर जिम्मेदार कौन है? सच तो यह है कि भारत के शहरों में कोई बहुमंजिला अवैध निर्माण रातों-रात खड़ा नहीं होता। जमीन का उपयोग बदलता है, नक्शा बनता है, निर्माण शुरू होता है, मंजिलें बढ़ती हैं, बिजली-पानी के कनेक्शन मिलते हैं और अंतत: उस इमारत में व्यावसायिक गतिविधियां शुरू हो जाती हैं। इस पूरी प्रक्रिया में अनेक विभागों और अधिकारियों की भूमिका होती है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

सवालों के जवाब देकर इस पीढ़ी की पीड़ा करें दूर

विश्वनाथ सचदेव

लगभग तेरह साल पुरानी बात है। तब नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री नहीं थे, प्रधानमंत्री-पद के उम्मीदवार थे। अपनी योग्यता-क्षमता को दिखाने के लिए उनके पास गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में किया गया काम था। उसी दौरान उन्होंने राजधानी दिल्ली के एक कॉलेज में एक भाषण दिया था। उस भाषण में वह सब था, जो एक उम्मीदवार मतदाता को रिझाने के लिए कह सकता है। सपना दिखाया गया था, वादे किए गए थे। उस भाषण का एक जुमला बहुत चर्चित हुआ था तब आधे भरे और आधे खाली गिलास वाला मुहावरा। आशावाद और निराशावाद का अंतर समझाने के लिए अक्सर यह उदाहरण दिया जाता है और कहा जाता है कि वह आशावादी है, जो गिलास को आधा भरा हुआ बताता है और जो कहता है कि गिलास आधा खाली है, वह निराशावादी है। तब नरेंद्र मोदी ने इस मुहावरे में एक बात और जोड़ी थी, जिसने इस घिसी-पिटी बात को 'ताज़गी' दे दी थी।

नरेंद्र मोदी ने कहा था, 'मुझे वह गिलास पूरा भरा हुआ दिखाई दे रहा है— आधा पानी से, और आधा हवा से।' तेरह साल बाद नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री के रूप में दिल्ली के उसी श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स में छात्रों को, और इसके बहाने देश को, संबोधित करने के लिए पहुंचे थे। अवसर कॉलेज के शताब्दी समारोह का था और जो विद्यार्थी उन्हें सुनने के लिए पहुंचे थे, वे तब शायद किसी स्कूल में पढ़ते होंगे। जिन्होंने तेरह साल पहले वाला 'पूरे भरे गिलास' वाला भाषण सुना था, उन्हें वह याद भी था और मेरी तरह शायद वे यह उम्मीद भी कर रहे थे कि प्रधानमंत्री पूरे भरे गिलास वाली अपनी बात दोहराएंगे। और प्रधानमंत्री ने भी अपनी कही उस बात को दोहराना जरूरी समझा। सामने बैठे विद्यार्थियों के लिए यह बात नई थी। उन्हें भी प्रधानमंत्री का आशावाद अच्छा लगा। तब भावी प्रधानमंत्री ने सपने दिखाए थे, अब वर्तमान प्रधानमंत्री 'अपना रिपोर्ट कार्ड' लेकर उपस्थित थे। पिछले तेरह साल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए की सरकार की उपलब्धियों को गिनाना शायद स्वाभाविक था। खूब गिनाईं, और तालियां भी बजीं।

प्रधानमंत्री यह जानते थे कि कॉलेज में पढ़ने वाली जिस पीढ़ी को वे संबोधित कर रहे हैं, वह 'जेन जी' नए मुहावरों को समझती है। देश के युवकों की एक अपनी भाषा है, अपना मुहावरा है उनका। प्रधानमंत्री ने कोशिश की उनसे उनकी भाषा में बात करने की। यह पीढ़ी सपने देखने के बजाय ठोस उपलब्धियों की जानकारी चाहती है। उपलब्धियां गिनाईं उन्होंने। पर यह 'जेन जी' सवाल उठाने वाली है। उपलब्धियों को स्वीकारा जाना चाहिए, पर ऐसे मौके आत्मान्वेषण के भी होते हैं। यह अवसर एक प्रसिद्ध शिक्षा-संस्थान की शताब्दी का था। विद्यार्थी उस शिक्षा-स्थिति के बारे में भी सुनना चाहते थे, जो आज के भारत की चिंता का विषय होना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं कि पिछले लगभग अस्सी साल में देश में अनेक महत्वपूर्ण शिक्षा-संस्थान खुले हैं। एक लंबी-चौड़ी सूची है हमारे पास नए-नए आई.आई.टी. और आई.आई.एम. की। लेकिन यह सवाल भी उठता रहा है कि हमारे शिक्षा-संस्थानों को वैश्विक स्वीकार्यता क्यों नहीं मिल पाई। प्राथमिक कक्षाओं से लेकर शिक्षा के उच्चतम पायदान पर दी जा रही शिक्षा आज सवालों के घेरे में क्यों है? गुणवत्ता और बुनियादी शिक्षा के स्तर पर बनी चुनौतियों को हम कब देखेंगे स्वीकारेंगे? लगभग 17 साल पहले हमने देश के नागरिकों के लिए शिक्षा के अधिकार को स्वीकारा था। सर्वशिक्षा अभियान जैसी पहल से स्थिति में कुछ सुधार आया है। पर प्राथमिक शिक्षा में जितना और जैसा सुधार अपेक्षित था, वह कहीं दिखाई नहीं दे रहा। आए दिन सरकारी स्कूलों के बंद होने और निजी स्कूलों के खुलने के समाचार मिल रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों की स्थिति को लेकर पिछले कुछ दिनों में देश में ढेरों सवाल उठे हैं। एक-एक कमरे में चार-चार कक्षाएं एक साथ लग रही हैं। स्कूलों में टाट-पट्टी और शौचालय जैसी ज़रूरी सुविधाओं का भी अभाव है। 'असर' जैसी संस्थाएं बार-बार इस स्थिति को उजागर कर रही हैं कि पांचवीं में पढ़ने वाला बच्चा तीसरी कक्षा की किताबें भी ठीक से नहीं पढ़ पा रहा। जहां तक उच्च शिक्षा का सवाल है, कुल मिलाकर निराशाजनक ही है। हमारे इंजीनियरिंग कॉलेजों की पढ़ाई भी उस स्तर की नहीं है कि डिग्री प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी रोजगार की अपेक्षाओं की शर्तों पर खरा उतर सके।

उच्च शिक्षा के लिए हमारे विद्यार्थी विदेशों में जाने को प्राथमिकता क्यों देते हैं? प्रधानमंत्री अंतरिक्ष में 'स्पेस सेंटर' बनाने का सपना तो दिखा रहे हैं, पर धरती पर दुर्दशा की हकीकत की गंभीरता को कब समझा जाएगा? श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स के अपने चर्चित भाषण में प्रधानमंत्री ने नई पीढ़ी से जुड़ने का प्रयास अवश्य किया है, पर पूरे भाषण पर चुनावी-साया दिखाई दे रहा है।

सफलता की होड़ से महत्वपूर्ण है जीवन

हमें ऐसा परिवार बनाना होगा, जहां बच्चा असफल होने पर भी घर लौट सके। ऐसा विद्यालय बनाना होगा, जहां विद्यार्थी अपनी समस्या कह सके। ऐसा समाज बनाना होगा, जहां किसी युवा की कीमत उसकी नौकरी, पैकेज या परीक्षा की रैंक से तय न हो।

डॉ. उमेश प्रताप वत्स

हर वर्ष 10 सितंबर को विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस मनाया जाता है। यह दिन हमें यह सोचने के लिए विवश करता है कि आखिर ऐसा क्या हो रहा है कि जीवन की शुरुआत की उम्र में हमारे युवा जीवन से ही हार मानने लगे हैं? भारत आज दुनिया के सबसे युवा आबादी देशों में है। हमारी सबसे बड़ी शक्ति हमारी युवा आबादी है, लेकिन यही युवा वर्ग यदि शिक्षा, रोजगार, प्रतियोगिता, पारिवारिक अपेक्षाओं और भविष्य की अनिश्चितता के दबाव में मानसिक रूप से टूटने लगे, तो यह केवल व्यक्तिगत त्रासदी नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चिंता का विषय है। एनसीआरबी की 'क्राइम इन इंडिया 2023' रिपोर्ट के अनुसार, भारत में वर्ष 2023 में 1,71,418 आत्महत्याएं दर्ज की गईं। यह संख्या अपने आप में अत्यंत गंभीर है। एनसीआरबी के अनुसार, आत्महत्या की राष्ट्रीय दर लगभग 12.4 प्रति एक लाख आबादी रही।

सबसे चिंताजनक बात यह है कि आत्महत्या के कारणों में पारिवारिक समस्याएं, बीमारी, वैवाहिक समस्याएं, नशा, आर्थिक कठिनाइयां तथा परीक्षा में असफलता और करिअर से जुड़ी समस्याएं भी शामिल हैं। नि:संदेह, आत्महत्या सामान्यत: किसी एक घटना का परिणाम नहीं होती। इसके पीछे अनेक परिस्थितियां, लंबे समय तक बना तनाव, निराशा, अकेलापन, मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं और व्यक्ति द्वारा अपनी परिस्थितियों को लेकर अनुभव की गई असहायता हो सकती है। आज विद्यार्थी के सामने सफलता की परिभाषा अत्यधिक संकीर्ण होती जा रही है। अच्छे अंक चाहिए। प्रतियोगी परीक्षा में चयन चाहिए। प्रतिष्ठित कॉलेज चाहिए। अच्छी नौकरी चाहिए और फिर दूसरों से बेहतर पैकेज चाहिए। यही सोच सबसे खतरनाक है। एक परीक्षा में असफल होना जीवन में असफल होना नहीं है। एक प्रतियोगी परीक्षा में चयन न होना व्यक्ति की प्रतिभा का अंतिम मूल्यांकन नहीं है। लेकिन जब विद्यार्थी को परिवार, समाज और स्वयं की अपेक्षाओं से लगातार यह अनुभव होने लगे कि उसके पास सफलता के अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प नहीं है, तब तनाव गंभीर रूप ले सकता है।

राजस्थान का कोटा लंबे समय से आईआईटी-जेईई और नीट जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी का प्रमुख केंद्र रहा है। देशभर से हजारों विद्यार्थी वहां पहुंचते हैं। कठोर प्रतिस्पर्धा, लंबे अध्ययन घंटे, टेस्ट सीरीज़, रैंक और लगातार होने वाले मूल्यांकन के बीच अनेक विद्यार्थी मानसिक दबाव का सामना करते हैं। कोटा वास्तव में उस व्यापक राष्ट्रीय समस्या का प्रतीक बन गया है, जिसमें शिक्षा और करिअर की प्रतिस्पर्धा कई बार विद्यार्थी के संपूर्ण व्यक्तित्व पर भारी पड़ जाती है। यह मान लेना भी उचित नहीं होगा कि समस्या केवल कोचिंग संस्थानों या छोटे शहरों तक सीमित है। देश के प्रतिष्ठित आईआईटी, नीट, विश्वविद्यालयों और मेडिकल संस्थानों में पढ़ने वाले विद्यार्थी भी मानसिक दबाव से गुजरते हैं।

देश के विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों में मानसिक दबाव के चलते विद्यार्थियों द्वारा आत्महत्या की घटनाएं समय-समय पर सामने आती रही हैं। ऐसी घटनाएं सोचने के लिए बाध्य करती हैं कि केवल उत्कृष्ट शैक्षणिक संस्थान उपलब्ध करा देना पर्याप्त नहीं है। वहां विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित और संवेदनशील मानसिक वातावरण भी आवश्यक है। ऐसी घटनाएं उच्च शिक्षा व्यवस्था में मानसिक स्वास्थ्य सहायता को संस्थागत बनाने की आवश्यकता अवश्य रेखांकित करती हैं। माता-पिता की अपेक्षाएं स्वाभाविक हैं, लेकिन तुलना और निरंतर दबाव विद्यार्थी के आत्मविश्वास को कमजोर कर सकते हैं। इस गंभीर समस्या के समाधान के लिए हमें शिक्षा व्यवस्था को भी बदलना होगा। हर विद्यार्थी डॉक्टर, इंजीनियर या सरकारी अधिकारी नहीं बन सकता। देश को हजारों अन्य क्षेत्रों में प्रतिभाशाली युवाओं की आवश्यकता है। देश में करिअर के विकल्प बढ़ने चाहिए। इससे करिअर का दबाव घटेगा। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में नियमित काउंसलिंग, मानसिक स्वास्थ्य स्क्रीनिंग, प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिकों की उपलब्धता, हेल्पलाइन और संकट की स्थिति में त्वरित सहायता प्रणाली अनिवार्य होनी चाहिए। बच्चों को सिखाना होगा कि जीवन कोई प्रतियोगी परीक्षा नहीं है, जिसमें केवल एक रैंक मिलती है।

विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस हमें अपने आसपास के लोगों को देखने की संवेदनशील दृष्टि देता है। यदि कोई विद्यार्थी अचानक बहुत चुप रहने लगे, सामाजिक संपर्क से कटने लगे, पढ़ाई या सामान्य गतिविधियों में रुचि खो दे, अत्यधिक निराशा व्यक्त करे अथवा अपने जीवन को लेकर निरर्थकता की बातें करे, तो उसे अनदेखा नहीं करना चाहिए। किसी व्यक्ति को आत्महत्या के विचार आ रहे हों या तत्काल खतरा महसूस हो, तो उसे अकेला न छोड़ें और तत्काल परिवार, स्थानीय आपातकालीन सेवा या मानसिक स्वास्थ्य सहायता से संपर्क करें। हमें ऐसा परिवार बनाना होगा, जहां बच्चा असफल होने पर भी घर लौट सके। ऐसा विद्यालय बनाना होगा, जहां विद्यार्थी अपनी समस्या कह सके। ऐसा समाज बनाना होगा, जहां किसी युवा की कीमत उसकी नौकरी, पैकेज या परीक्षा की रैंक से तय न हो।

बप्पा को लगाएं चॉकलेट मोदक का भोग

सावन के बाद से भारत में त्योहारों की झड़ी लग जाती है। रक्षाबंधन के कुछ दिन बाद ही गणेश चतुर्थी का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन से गणेश उत्सव का आरंभ होता है, जोकि पूरे 10 दिन तक चलता है। गणेश उत्सव की धूम हर जगह दिखाई देती है। दस दिन तक लोग घरों में बप्पा को स्थापित करके रखते हैं। इन दस दिनों में उन्हें खूब पकवानों का भोग लगाया जाता है। अगर गणपति बप्पा के प्रिय भोग की बात करें तो इसमें मोदक सबसे पहले आता है। वैसे तो बाजार में आपको हर तरह के मोदक मिल जाएंगे, लेकिन अगर आप खुद से मोदक बनाकर इसका भोग भगवान गणेश को लगाएंगे तो इससे बप्पा जरूर प्रसन्न होंगे। इस बार गणपति उत्सव में आप बप्पा को साधारण की जगह चॉकलेट मोदक का भोग लगा सकते हैं।

सामान

मिल्क चॉकलेट-200 ग्राम, कोको पाउडर-1 बड़ा चम्मच, स्टफिंग के लिए सामान, खोया (मावा)-100 ग्राम, चीनी पाउडर-2 बड़े चम्मच, नारियल बूरा-2 बड़े चम्मच, काजू, बादाम, पिस्ता (बारीक कटे हुए), इलायची पाउडर, घी।

विधि

चॉकलेट मोदक बनाने के लिए आपको सबसे पहले इसकी स्टफिंग तैयार करनी है। स्टफिंग को तैयार करने के लिए एक कढ़ाई में मावा को हल्की आंच पर भून लें। इसे तब तक भूनें जब तक यह हल्का गुलाबी न हो जाए और घी छोड़ने लगे। जब मावा घी छोड़ने लगे तो इसमें चीनी पाउडर, नारियल बूरा, काजू, बादाम, पिस्ता, और इलायची पाउडर डालें। इसे अच्छी तरह से मिलाएं और फिर आंच से उतारकर ठंडा होने दें। जब तक ये ठंडा हो रहा है, तब तक मिल्क चॉकलेट को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें और इसे माइक्रोवेव में पिघला लें। इस पिघली हुई चॉकलेट में कोको पाउडर मिलाएं ताकि एकसार मिश्रण बन जाए। अब मोदक बनाने की विधि शुरू करनी है तो सबसे पहले मोदक मोल्ड को हल्का घी से चिकना करें। अब इस मोल्ड के अंदर तैयार की गई स्टफिंग भरें। अच्छी तरह से स्टफिंग भरने के बाद इसे निकाल लें। इसी तरह से मोदक तैयार करें। सभी मोदक तैयार होने के बाद इसके ऊपर पिघली हुई चॉकलेट डालें। इसे फिर से 10-15 मिनट के लिए फ्रिज में रखें ताकि यह पूरी तरह से सेट हो जाए। आपके स्टफिंग वाले चॉकलेट मोदक तैयार हैं। इसका भोग लगाने के बाद आप इसे प्रसाद के रूप में बांट भी सकते हैं।

बड़ों के साथ बच्चे को भी पिलाएं ये स्वादिष्ट जूस

आजकल की बिगड़ी हुई लाइफस्टाइल के बीच अपनी सेहत का ध्यान रखना काफी मुश्किल हो जाता है। दरअसल, लोग नौकरी और पढ़ाई की आपाधापी में इतना व्यस्त हो गए हैं कि उन्हें अपनी सेहत का ध्यान रखने का समय ही नहीं मिल पाता। यदि आप भी उन्हीं लोगों में हैं, जिनके पास सेहत का ध्यान रखने का समय नहीं है तो यहां हम आपको एक ऐसी जूस की रेसिपी बताने जा रहे हैं, जो सेहत के लिए काफी लाभदायक है। हम यहां बात कर रहे हैं चुकंदर के जूस की, जिसको पीने से शरीर की कई परेशानियां दूर होती हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि चुकंदर में कई अनगिनत पोषक तत्व पाए जाते हैं। अगर आप घर पर कुछ हेल्दी और स्वादिष्ट पेय पदार्थ बनाना चाहते हैं तो चुकंदर का जूस बनाकर खुद भी सकते हैं और अपने परिवारवालों को भी पिला सकते हैं।

सामान

2-3 मध्यम आकार के चुकंदर, 1 गाजर, 1 सेब, 1 इंच अदरक का टुकड़ा, आधा नींबू का रस, स्वाद के लिए नमक, पानी।

विधि

चुकंदर का जूस बनाने के लिए सबसे पहले चुकंदर, गाजर और सेब को धोकर छील लें और छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें। अगर आप अदरक का उपयोग कर रहे हैं तो उसे भी छीलकर छोटे टुकड़ों में काट लें। अदरक का इस्तेमाल पूरी तरह से आप पर निर्भर करता है। अब जूसर में कटे हुए चुकंदर, गाजर, सेब और अदरक डालें। यदि आप चाहें तो थोड़ा पानी भी मिला सकते हैं ताकि जूस थोड़ा पतला हो सके। वरना बिना पानी के भी जूस तैयार कर सकते हैं। अब जूसर को चालू करें और सभी सामग्री का रस निकालें। इसे निकालकर छलनी की मदद से छान लें। ताकि बीच-बीच में किसी भी चीज के तिनके स्वाद को खराब न करें। अब जब जूस तैयार हो जाए, तो उसमें आधा नींबू का रस मिलाएं। नींबू के रस के अलावा इस जूस में स्वादानुसार थोड़ा सा नमक मिला सकते हैं। बस आपका ये स्वादिष्ट और पौष्टिक जूस तैयार है।

हंसना मना है

गर्लफ्रेंड: मेरी मम्मी को तुम बहुत पसंद आये हो, पप्पू: चल पगली, कुछ भी हो मैं शादी तुमसे ही करूंगा.. आंटी से कहना वो मुझे भूल जाएं।

ऑफिस में बॉस ने जोक सुनाया तो पूरी टीम हंसने लगी, बस एक लड़का नहीं हंसा... बॉस ने उससे पूछा- क्या तुम्हें मेरा जोक समझ नहीं आया? लड़का- सर, मेरा सलेक्शन दूसरी कंपनी में हो गया है...

जज- घर में मालिक के रहते हुए तुमने चोरी कैसे की? गोलू- जज साहब आपकी अच्छी नौकरी है, अच्छी सैलरी है। फिर आप ये सब सीख कर क्या करोगे...

गोलू - मैं आपकी बेटी से शादी करना चाहता हूं। पड़ोसी- कितना कमा लेते हो? गोलू- 20 हजार। पड़ोसी- मैं अपनी बेटी को 15 हजार पॉकेट मनी देता हूं। गोलू- मैं भी तो उसी को जोड़कर ही तो बता रहा हूं...

कहानी | ब्राह्मण का सपना

एक वक्त की बात है, किसी शहर में एक कंजूस ब्राह्मण रहता था। एक दिन उसे भिक्षा में जो सत्तू मिला, उसमें से थोड़ा खाकर बाकी का उसने एक मटके में भरकर रख दिया। फिर उसने उस मटके को खूंटी से टांग दिया और पास में ही खाट डालकर सो गया। सोते-सोते वो सपनों की अनोखी दुनिया में खो गया और विचित्र कल्पनाएं करने लगा। वो सोचने लगा कि जब शहर में अकाल पड़ेगा, तो सत्तू का दाम 100 रुपये हो जाएगा। मैं सत्तू बेचकर बकरियां खरीद लूंगा। बाद में इन बकरियों को बेचकर गाय खरीदूंगा। इसके बाद भैंस और घोड़े भी खरीद लूंगा। कंजूस ब्राह्मण कल्पनाओं की विचित्र दुनिया में पूरी तरह खो चुका था। उसने सोचा कि घोड़ों को अच्छी कीमत पर बेचकर खूब सारा सोना खरीद लूंगा। फिर सोने को अच्छे दाम पर बेचकर बड़ा-सा घर बनाऊंगा। मेरी संपत्ति को देखकर कोई भी अपनी बेटी की शादी मुझसे करा देगा। शादी के बाद मेरा जो बच्चा होगा, मैं उसका नाम मंगल रखूंगा। फिर जब मेरा बच्चा अपने पैरों पर चलने लगेगा, तो मैं दूर से ही उसे खेलते हुए देखकर आनंद लूंगा। जब बच्चा मुझे परेशान करने लगेगा, तो मैं गुस्से में पत्नी को बोलूंगा और कहूंगा कि तुम बच्चे को ठीक से संभाल भी नहीं सकती हो। अगर वह घर के काम में व्यस्त होगी और मेरी बात का पालन नहीं करेगी, तब मैं गुस्से में उठकर उसके पास जाऊंगा और उसे पैर से ठोकर मारूंगा। ये सारी बातें सोचते-सोचते ब्राह्मण का पैर ऊपर उठता है और सत्तू से भरे मटके में ठोकर मार देता है, जिससे उसका मटका टूट जाता है। इस तरह सत्तू से भरे मटके के साथ ही कंजूस ब्राह्मण का सपना भी चकनाचूर हो जाता है।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद् हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

चंद्रमा 7वें भाव में प्रवेश करेगा, जिससे साझेदारियों में बड़ा लाभ होगा। व्यापारिक सौदों में प्रगति होगी और नए विचारों पर चर्चा संभव है। रुका हुआ धन वापस मिलने के योग हैं।

वृषभ

6ठे भाव में चंद्रमा का प्रवेश कार्यक्षेत्र में आपके वर्चस्व को बढ़ाएगा। व्यापारिक निर्णयों में सतर्कता बरतें, विरोधी शांत रहेंगे। लव पार्टनर के साथ संवाद बनाए रखें।

मिथुन

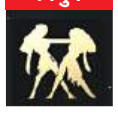

5वें भाव का गोचर बुद्धि, निर्णय क्षमता और आय में वृद्धि कराएगा। विपणन और संपर्क सूत्रों से व्यापार में विस्तार होगा। लव लाइफ खुशनुमा रहेगी और यात्रा के योग हैं।

कर्क

चौथे भाव में चंद्रमा का प्रवेश संपत्ति या वाहन से जुड़े लाभ देगा। प्रॉपर्टी या निर्माण क्षेत्र से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिल सकता है। निवेश के लिए समय अनुकूल है।

सिंह

तीसरे भाव में चंद्रमा का गोचर आपके साहस, संवाद और प्रभाव को बढ़ाएगा। व्यापार में नए प्रयोग लाभदायक सिद्ध होंगे। जीवनसाथी का पूरा समर्थन मिलेगा।

कन्या

दूसरे भाव में चंद्रमा के जाने से आर्थिक पक्ष काफी मजबूत होगा। व्यापारिक लेनदेन में पारदर्शिता रखें, जिससे बचत बढ़ेगी। लव पार्टनर की भावनाओं का सम्मान करें।

तुला

चंद्रमा आपकी अपनी राशि के 1ले भाव में प्रवेश कर रहा है, जिससे मानसिक स्पष्टता मिलेगी। कला, फैशन और लग्जरी से जुड़े कारोबारियों को बेहतरीन लाभ होगा।

वृश्चिक

12वें भाव में चंद्रमा का प्रवेश खर्चों में वृद्धि या दूर की यात्राएं दे सकता है। व्यापार विस्तार के लिए दिन मिलाजुला रहेगा। आपसी समझ से प्रेम संबंध और गहरे होंगे।

धनु

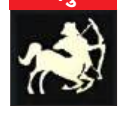

11वें भाव में चंद्रमा का प्रवेश आपकी बड़ी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करेगा। कारोबार में गति आएगी और बड़े लाभ के मार्ग खुलेंगे। लव लाइफ में मिठास बनी रहेगी।

मकर

10वें भाव में चंद्रमा का गोचर करियर में नई ऊंचाइयों और प्रमोशन के योग बनाएगा। व्यावसायिक गतिविधियों में बड़ा बदलाव या विस्तार संभव है।

कुम्भ

9वें भाव (तुला) में चंद्रमा का प्रवेश होते ही भाग्य का पूरा साथ मिलने लगेगा। डिजिटल माध्यमों या ऑनलाइन व्यापार में बड़ी सफलता मिलेगी। नींद पूरी लें।

मीन

8वें भाव में गोचर होने से शाम के समय वाहन और स्वास्थ्य का ध्यान रखें। व्यापार में जोखिमभरे फैसलों से बचें। दांपत्य जीवन में शांति बनाए रखें।

अब निगेटिव किरदारों से थोड़ा ब्रेक लेना चाहते हैं सैफ अली खान

पिछले कुछ सालों में ताना जी के उदयभान, आदिपुरुष के लंकेश, देवरा 1 के भैरवा जैसे नकारात्मक किरदारों के लिए सुर्खियां बटोरने वाले ऐक्टर सैफ अली खान अब विलेन वाली भूमिकाओं से थोड़ी दूरी बनाना चाहते हैं। ऐसे में, अपनी अगली फिल्म हैवान में एक अंधे म्यूजिशियन और मार्शल आर्टिस्ट के चुनौतीपूर्ण रोल को लेकर वह खासे उत्साहित हैं। सैफ अली खान ने अपनी इस फिल्म को लेकर बातें करते हुए कहा कि वह अभी कुछ समय के लिए हीरो के रोल ही करना चाहते हैं। अपनी इस फिल्म में अपने रोल को लेकर बातें की जिसमें वो देख नहीं पाते हैं।

सैफ अली खान ने कहा, मैं अभी नेगेटिव रोल से थोड़ा ब्रेक लेना चाहता हूं। तब मैं बतौर ऐक्टर ऐसे किरदार एक्सप्लोर करना चाहता था, मगर अभी कुछ समय के लिए हीरो के रोल ही करना चाहूंगा। सैफ हैवान के अपने किरदार को बहुत ही खास मानते हैं। वह कहते हैं, मैंने अब तक ज्यादातर जो रोल किए हैं, उनके प्रति सहानुभूति नहीं होती। वे या तो मजबूत हैं या प्रिविलेज्ड हैं या नेगेटिव, तो उनके लिए दुख महसूस नहीं होता, जबकि इसके लिए आपके मन से आह निकलती है, जो मेरे लिए बहुत अलग और नई बात थी और मैंने इसी इमोशन को निचोड़ा है।

उन्होंने आगे कहा था, हांलांकि, अंधे का रोल करना बहुत चुनौतीपूर्ण था। ऊपर से वो बच्चों को म्यूजिक, मार्शल आर्ट, रेसलिंग भी सिखाते हैं, तो मुझे स्ट्रेस था कि वो नकली न लगे लेकिन मेरे दिमाग में जैपनीज समुराई फिल्में थीं। वे काफी ऐसी फिल्में बनाते हैं कि एक अंधा आदमी कैसे सुनकर महसूस करते हैं, फाइट भी कर सकते हैं, तो वे फिल्में देखकर मुझमें कंविक्शन था कि मैं भी ऐसा कर सकता हूं।

पहली बार अक्षय के आगे हीरो के रोल में हूं

फिल्म हैवान में ओजी अनाड़ी-खिलाड़ी यानी सैफ और अक्षय कुमार की जोड़ी 2008 में आई टशन के 18 साल बाद दोबारा साथ में नजर आ रही है। इस जुगलबंदी पर सैफ कहते हैं, नोस्टैल्जिया बहुत अच्छी बात है। हम दोनों तीस साल से काम कर रहे हैं तो ऑडियंस के दिमाग में ये पुरानी बात कहीं न कहीं है। वैसे, इस फिल्म में हमारा इक्वेजन बिल्कुल अलग है। इसमें मेरा रोल थोड़ा ज्यादा टफ, सीरियस और हीराइक है, जो अक्षय के साथ वाली फिल्मों में पहली बार होगा। पहली बार उनके सामने मुझे इतनी जिम्मेदारी दी गई है।

अरिजीत सिंह की सिंगिंग के मुरीद हुए काजी तौकीर

बिग बॉस 20 के हालिया एपिसोड में काजी तौकीर ने सिंगर अरिजीत सिंह की बहुत तारीफ की। इसके साथ उनका एक मशहूर गाना गाकर उन्हें ट्रिब्यूट दिया। अमन गांधी से बातचीत के दौरान काजी ने कहा, अगर मैं क्रेजी हूं, तो वो क्रेजीपन के बाप हैं। जब अमन ने कहा कि काजी नेशनल टेलीविजन पर यह बात कह रहे हैं, तो काजी ने जवाब दिया कि अरिजीत को ऐसी बातों की परवाह नहीं है। सिंगर की तारीफ जारी रखते हुए उन्होंने कहा, वो अलग ही लेवल के इंसान हैं। वो एक पागल वैज्ञानिक हैं। फिर काजी ने अरिजीत के लिए फ्लाइंग किस दिया और कहा, मैं तुम्हें प्यार करता हूं। दूसरे प्रतिभागियों के साथ अरिजीत के बारे में बात करते हुए काजी ने माना कि वह सिंगर का बहुत सम्मान करते हैं और अपनी तारीफ को शब्दों में बयां नहीं कर सकते। फिर उन्होंने आशिकी 2 का गाना तुम ही हो गाकर उन्हें ट्रिब्यूट दिया।

काजी की ये बातें तब सामने आईं जब अरिजीत ने सोशल मीडिया पर बताया कि वह पहली बार बिग बॉस देखने का प्लान बना रहे हैं क्योंकि काजी शो में हिस्सा ले रहे हैं। सिंगर की पोस्ट ने काजी की उनके प्रति तारीफ को और भी खास बना दिया। अरिजीत सिंह ने ट्वीट किया, मुझे अपनी जिंदगी में पहली बार बिग बॉस देखना होगा क्योंकि हमारा रॉकस्टार काजी वहां है। इस पोस्ट से 2005 में फेम गुरुकुल के दिनों से उनके बीच के गहरे रिश्ते का पता चलता है। अरिजीत सिंह और काजी तौकीर की दोस्ती 2005 में फेम गुरुकुल के दिनों से है। करियर के रास्ते अलग होने के बावजूद, दोनों दो दशकों से ज्यादा समय से संपर्क में हैं। काजी ने पहले अरिजीत को अपना करीबी दोस्त बताया और हाल ही में दोनों को अरिजीत के होमटाउन, जियागंज में साथ समय बिताते देखा गया था। उन्होंने स्कूटी की सवारी की और क्रिकेट एकेडमी भी गए। हालांकि उन्होंने अभी तक कोई बड़ा प्रोफेशनल कोलैबोरेशन नहीं किया है। हालांकि काजी ने साथ काम करने की संभावना का इशारा दिया है।

हुंकार की रिलीज से पहले अनीत पड्डा के लुक ने ढाया कहर

अनीत पड्डा अपनी अपकमिंग सीरीज हुंकार को लेकर चर्चा में हैं। हाल ही में इसका ट्रेलर जारी हुआ है। वह इसके प्रमोशन में व्यस्त हैं। इस बीच अभिनेत्री ने सोशल मीडिया पर अपनी नई तस्वीरें शेयर की हैं। इन तस्वीरों में अभिनेत्री काफी खूबसूरत लग रही हैं। अभिनेत्री ने जो तस्वीरें शेयर की हैं, उनमें देखा जा सकता है कि उन्होंने वेस्टर्न आउटफिट पहना है और अपने बाल खोले हुए हैं। उन्होंने ब्लैक जूती से अपने लुक को पूरा किया है। अभिनेत्री ने हलकी ज्वेलरी पहनी है। अनीत पड्डा ने तस्वीरें शेयर करते हुए कैप्शन में गुलाब के फूल वाला इमोजी बनाया है। अभिनेत्री की तस्वीरों पर कई यूजर्स ने कमेंट किए हैं।

- *एक यूजर ने उनके आउटफिट की तारीफ की है। एक और यूजर ने कमेंट में लिखा हे भगवान बहुत खूबसूरत। एक और यूजर ने उन्हें बार्बी डॉल कहा है। एक और यूजर ने लिखा मेरी गुड़िया। क्या मैं तुम्हें अपने जेब में रख सकता हूं?*
- *आपको बता दें कि अनीत पड्डा सलाम वेंकी में नजर आईं थीं। उन्हें सबसे ज्यादा पहचान सैयारा से मिली थी। इसमें उनके साथ अहान पांडे थे। जल्द ही वह फिल्म शक्ति शालिनी का हिस्सा होंगी। अनीत पड्डा की नई वेब सीरीज हुंकार का ट्रेलर रिलीज हो गया है।*
- *इसमें वह बापजी के खिलाफ आवाज उठाती हैं, जो बहुत प्रभावशाली है। सीरीज में उनके साथ फातिमा सना शेख हैं, जो केस की जांच करती हैं। इस सीरीज में मोहम्मद जीशान अय्यूब, अर्जुन माथुर, रघुबीर यादव और राम कपूर भी अहम भूमिकाओं में हैं। हुंकार वेब सीरीज 25 सितंबर से जियो हॉटस्टार पर स्ट्रीम होगी।*

25 सितंबर से जियो हॉटस्टार पर स्ट्रीम होगी हुंकार वेब सीरीज

बिहार में बाढ़ पर सियासत गरमाई

» तेजस्वी बोले- डबल इंजन सरकार के दोनों इंजनों में लगी आग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना । बिहार में बाढ़ को लेकर सियासत तेज हो गई है। नेता प्रतिपक्ष और राजद के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव ने रविवार को राज्य सरकार और केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार पर जमकर हमला बोला। उन्होंने दावा किया कि बिहार में 45 लाख से अधिक लोग बाढ़ से प्रभावित हैं, लेकिन केंद्र और राज्य सरकार इस संकट को लेकर गंभीर नहीं हैं। तेजस्वी ने कहा कि बिहार की डबल इंजन सरकार के दोनों इंजनों में आग लगी हुई है, इसलिए बाढ़ पीड़ितों को सहायता नहीं मिल रही है।

तेजस्वी यादव ने पटना स्थित अपने आवास पर संवाददाता सम्मेलन में कहा कि उन्होंने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर बिहार की बाढ़ को राष्ट्रीय आपदा घोषित करने, प्रभावित परिवारों को मुआवजा देने और विशेष आर्थिक पैकेज देने की मांग की है। मुख्यमंत्री को भी पत्र लिखा गया है, लेकिन अब तक उनकी मांगों पर कोई

बाढ़ के स्थायी समाधान पर सरकार का ध्यान नहीं

राजद ने एनडीए सरकार को घेरा

चुनाव आते ही बिहार में दिखने लगते हैं प्रधानमंत्री और गृह मंत्री

तेजस्वी यादव ने कहा कि जब चुनाव का समय आता है तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर गृह मंत्री अमित शाह तक बिहार में नजर आते हैं और वोट मांगते हैं। लेकिन जब बिहार के लाखों लोग बाढ़ की चपेट में हैं, तब केंद्रीय नेताओं की ओर से कोई गंभीर पहल नहीं दिखाई दे रही है। उन्होंने अमित शाह के पुराने चुनावी वादों पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि चुनाव के समय बिहार को बाढ़ से निजात दिलाने की बात की जाती है, लेकिन आज जब 45 लाख से अधिक लोग बाढ़ से प्रभावित हैं तो वे कहां हैं।

गंभीर कार्रवाई नहीं हुई है। तेजस्वी ने कोसी में आई पिछली बड़ी बाढ़ का जिक्र करते हुए कहा कि उस समय तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू प्रसाद के प्रयासों से बिहार को विशेष पैकेज मिला था। उन्होंने कहा कि तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी खुद बिहार आए थे और बाढ़ पीड़ितों के बीच सहायता पहुंचाई थी। उन्होंने केंद्र की मौजूदा सरकार पर बिहार के साथ सौतेला व्यवहार करने का आरोप लगाया। तेजस्वी ने कहा कि गुजरात में बारिश होने पर भी राहत शिविर और हरसंभव मदद उपलब्ध कराई जाती है, लेकिन बिहार में आपदा के समय भाजपा और केंद्र के नेता लोगों को उनके हाल पर छोड़ देते हैं। राजद नेता ने आरोप लगाया कि बिहार में बाढ़ की समस्या के स्थायी समाधान की दिशा में डबल इंजन सरकार की ओर से कोई ठोस काम नहीं किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आपदा के समय प्रभावित लोगों को पर्याप्त सहायता नहीं मिल रही है और न ही केंद्र से अपेक्षित मदद दिलाई जा रही है। तेजस्वी ने अपने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के दौरे का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि जब वह बाढ़ पीड़ितों के बीच गए तो उनकी नाव बीच नदी में फंस गई थी और ग्रामीणों ने किसी तरह उन्हें बचाया। उन्होंने कहा कि नेता प्रतिपक्ष होने के नाते उन्होंने जमीनी स्थिति का जायजा लिया और सरकार से पीड़ितों को सहायता राशि देने की मांग की।

बिहार के 31 सांसद और सात केंद्रीय मंत्री, फिर भी मदद नहीं

तेजस्वी ने कहा कि बिहार से एनडीए के 31 लोकसभा सांसद और सात केंद्रीय मंत्री हैं। इसके बावजूद बाढ़ की विभीषिका झेल रहे लोगों को उनके हाल पर छोड़ दिया गया है। उन्होंने आरोप लगाया कि बिहार के केंद्रीय मंत्रियों में इतनी राजनीतिक हैसियत नहीं है कि वे केंद्र से राज्य के लिए पर्याप्त सहायता राशि दिला सकें। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने जुलाई में आकस्मिक निधि से करीब 4000 करोड़ रुपये निकाले। तेजस्वी ने दावा किया कि इसका इस्तेमाल वेतन और अन्य मदों में किया गया। उन्होंने सरकार के खजाने की स्थिति पर भी सवाल उठाए। तेजस्वी यादव ने कहा कि बाढ़ प्रभावित लोगों के लिए चलाए जा रहे सामुदायिक किचन और रसोई की सूची उन्होंने सरकार से मांगी थी, लेकिन उन्हें यह सूची उपलब्ध नहीं कराई जा रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार बाढ़ पीड़ितों की वास्तविक स्थिति को सामने नहीं आने देना चाहती।

ब्रिक्स में भारत ने खुलकर नहीं रखी बात : महबूबा मुफ्ती

» पीडीपी प्रमुख बोलीं- कुर्सी मिली, लेकिन मुंह बंद रहा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। पीडीपी अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रुख पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि भारत के पास इस मंच पर वैश्विक मानवाधिकार और लोकतंत्र से जुड़े मुद्दों पर मजबूती से अपनी बात रखने का मौका था लेकिन प्रधानमंत्री ने बेहद सावधानी से शब्दों का चयन किया। महबूबा ने कहा कि भारत लंबे समय से मानवाधिकार, लोकतंत्र और स्वतंत्र विदेश नीति का समर्थक रहा है। इसके बावजूद गाजा और पश्चिम एशिया में हुई घटनाओं को लेकर भारत की ओर से अपेक्षित मजबूती से आवाज नहीं उठाई गई। उन्होंने कहा, हमें अध्यक्षता तो मिली, लेकिन हमारी आवाज बंद रही। महबूबा ने ब्रिक्स के दिल्ली घोषणापत्र का स्वागत किया, जिसमें पहलगाम आतंकी हमले की निंदा और पश्चिम एशिया की स्थिति पर कड़ा रुख अपनाया गया है।

उन्होंने कहा कि भारत को इस घोषणा की पहल करते हुए सबसे आगे रहना चाहिए था। पीडीपी अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि पिछले कुछ वर्षों में भारत की विदेश नीति में बदलाव आया है और आतंकवादी हमलों की निंदा में भी चयनात्मक रवैया अपनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि दुनिया बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर बढ़ रही है, जबकि भारत अभी भी महाशक्ति-केंद्रित सोच में फंसा हुआ है।

चीन ने पाकिस्तान का साथ दिया फिर भी रेड कार्पेट : गुलाम मीर

जम्मू-कश्मीर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और विधायक गुलाम अहमद मीर ने ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के घोषणापत्र में पहलगाम आतंकी हमले की निंदा किए जाने का स्वागत किया है। हालांकि, उन्होंने प्रधानमंत्री पर चीन के प्रति नरम रुख अपनाने का आरोप लगाते हुए सवाल उठाए। मीर ने कहा कि बड़ा सवाल यह है कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान के साथ खड़े रहे देशों के प्रति भारत ने कैसा रुख अपनाया। कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान चीन ने पाकिस्तान का समर्थन किया था, इसके बावजूद ब्रिक्स सम्मेलन में चीन का स्वागत किया गया। उन्होंने कहा कि चीन ने गलवान में भारतीय सैनिकों को बलिदान किया और लद्दाख तथा अरुणाचल प्रदेश में भारतीय क्षेत्र में अतिक्रमण किया।मीर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को ब्रिक्स के मंच पर चीन के साथ इन मुद्दों को मजबूती से उठाना चाहिए था और भारत का स्पष्ट रुख रखना चाहिए था। उन्होंने आरोप लगाया कि इस मामले में केंद्र सरकार विफल रही है।

अपनी ही सरकार पर बरसे कौशल किशोर

» पूर्व बीजेपी सांसद बोले- कुछ लोग रैली को विफल करने की कोशिश कर रहे हैं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बीजेपी में अपनी अनदेखी को लेकर लगातार सवाल उठाने वाले मोहनलालगंज के पूर्व सांसद और पूर्व केंद्रीय राज्यमंत्री कौशल किशोर एक बार फिर चर्चा में हैं। आज होने वाली आत्मसम्मान रैली से पहले उन्होंने लोगों से भारी संख्या में पहुंचने की अपील की है। इसके साथ ही उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ लोग रैली को विफल करने और उसे रोकने की कोशिश कर रहे हैं। बीजेपी नेता कौशल किशोर ने लोगों से साफ कहा कि वे किसी के बहकावे में न आएं। उनके इस बयान के बाद उनके हालिया सोशल मीडिया पोस्ट और बीजेपी छोड़ने की अटकलों की चर्चा भी फिर तेज हो गई है। कौशल किशोर ने आत्मसम्मान रैली के उद्देश्य को लेकर भी अपनी बात रखी।

उन्होंने कहा कि इस रैली का मकसद शिक्षा से जुड़े कई अहम मुद्दों को उठाना है. उनका कहना है कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिससे देश विकसित और आत्मनिर्भर बनने के साथ-साथ नशामुक्त भी हो। उन्होंने कहा कि किसी के बहकावें में न आना क्योंकि कुछ लोग रैली को विफल करने के लिए रोकने का प्रयास कर रहे हैं। ये वो लोग हैं, जो लोकसभा चुनाव में बीजेपी में रहते हुए योगी जी का मोदी जी का विरोध करके बीजेपी के खिलाफ वोट मांग रहे थे। रैली के लक्ष्य को बताते हुए पूर्व सांसद कौशल किशोर ने कहा, आत्मसम्मान रैली का लक्ष्य है, एक समान शिक्षा, नशामुक्त शिक्षा, अपराधमुक्त शिक्षा, रोजगारपरक शिक्षा, तब बनेगा विकसित व आत्मनिर्भर एवं नशामुक्त भारत. इसके लिए सभी लोग जरूर 13 सितंबर को आत्मसम्मान रैली में आइए उनकी अपील ऐसे समय आई है, जब पिछले कुछ समय से उनके सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर भी राजनीतिक चर्चाएं तेज हुई थीं।

ठगों पर क्यों मेहरबान है यूपी पुलिस

» राजधानी के जुनैद से 27 लाख की ठगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लखनऊ के थाना ठाकुरगंज के जुनैद चांद नामक युवक से कानपुर के रहने वाले उसके ही दोस्त मोहम्मद शमशाद और मोहम्मद नौशाद ने पहले षड्यंत्र रचकर 27 लाख रुपए की ठगी की घटना को अंजाम दे दिया और उसके बाद पीड़ित जुनैद के खिलाफ ही फ़र्ज़ी आरोप लगा कर जाजमऊ थाना की पुलिस से साठ-गांठ कर झूठे मुकदमा दर्ज करा दिया। आपको बता दे जुनैद चांद वी-युग मेटा वर्स में एक्स,आर टेक्नोलॉजी पर काम करते है, इसी को देखते हुए जून 23 को उसके एक करीबी दोस्त मो.नौशाद ने उससे घर की अलग-अलग दिक्कत बता कर अपने भाई व परिवारजनो पर लगभग 27 लाख के ऊपर की रकम ऐठ ली।

और उस रकम को जब जुनैद चांद ने वापस मंगा तो टालमटोल करने लगा और रकम वापस न देनी पड़े इसके लिए उसने कानपुर के जाजमऊ थाने में बिना किसी

साक्ष्य के जुनैद व उसके परिजनों पर फ़र्ज़ी मुकदमा दर्ज करवा दिया और जुनैद चांद को मुकदमे की कार्यवाही कि धमकी देते हुए मुकदमे में समझौते की बात की और 1 करोड़ की मांग रखी,हालांकि जुनैद ने मोहम्मद नौशाद को पैसा न देकर कोर्ट का रुख किया है और तमाम बातों को कोर्ट के माध्यम से रखी है जिसके बाद कानपुर की सीजेएम कोर्ट ने थाना जाजमऊ को साक्ष्यों के साथ अदालत के पेश होने की नोटिस भी जारी की है लेकिन पुलिस अभी तक कोर्ट में किसी तरह का साक्ष्य पीड़ित जुनैद के खिलाफ नही पेश कर पाई है जिससे पुलिसिया कार्यवाही पर अब लोग सवाल खड़े करने लगे है। जुनैद का दावा है की अपराधियो को कानपुर की जाजमऊ थाने का पूरा संरक्षण प्राप्त है और इसका सीधा सबूत है की जाजमऊ थाने में तैनात एसआई देवेश मोहन और एसआई प्रदीप पांडेय उसके करीबीयों को काल कर रहे है और जुनैद व परिवार के खिलाफ झूठी गवाही देने की धमकी दे रहे है जिसका ऑडियो भी मौजूद है। पीड़ित के अधिवक्ताअर्श आलम ने बताया की पीड़ित पक्ष पर हुए झूठे मुकदमे के खिलाफ साक्ष्यों को सीजेएम कोर्ट में रखा गया और ये दावा किया गया है की जाजमऊ थाने में लिखी गई एफआईआर में विपक्षियों ने बिना किसी साक्ष्य के मुकदमा दर्ज कराया है जिसपर सीजेएम ने जाजमऊ थाने को नोटिस किया लेकिन पुलिस अभी तक साक्ष्यों पेश नही कर पाई।

भारत ने 8वीं बार जीता महिला एशिया कप का खिताब

» फाइनल में श्रीलंका को 72 रनों से हराया, पूरे टूर्नामेंट में टीम रही अजेय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

दुबई। भारतीय महिला टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए श्रीलंका को हराकर आठवीं बार एशिया कप का खिताब अपने नाम कर लिया है। भारत ने दुबई में खेले गए इस मुकाबले में श्रीलंका को 72 रनों से हराया। भारतीय टीम पूरे टूर्नामेंट में अजेय रही। भारत ने 20 ओवर में पांच विकेट पर 183 रन बनाए। जवाब में श्रीलंका की टीम 20 ओवर में 111 रन पर ऑलआउट हो गई। भारत ने सर्वाधिक आठ बार खिताब अपने नाम किया है। भारत ने 2004, 2005, 2006, 2008 में वनडे प्रारूप और 2012, 2016, 2022 और 2026 में टी20 प्रारूप में एशिया कप अपने नाम किया है।

उसे 2018 और 2024 में फाइनल में हार मिली थी। लक्ष्य का पीछा करने उतरी श्रीलंका को भारतीय गेंदबाजों ने लगातार झटके दिए और मैच में पकड़ मजबूत की। भारत के लिए श्री चरणी ने सबसे ज्यादा चार विकेट झटके, जबकि दीप्ति शर्मा को तीन विकेट मिले। क्रांति गौड़, शेफाली वर्मा और प्रेमा रावत को एक-एक सफलता मिली। इससे पहले, टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम को स्मृति मंधाना और शेफाली वर्मा ने मजबूत शुरुआत दिलाई। दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 129 रनों की साझेदारी हुई। शेफाली वर्मा 68 रन बनाकर आउट हुईं। इसके कुछ देर बाद मंधाना भी 59 रन बनाकर आउट हुईं। लेकिन इस साझेदारी के टूटने के बाद भारतीय पारी लड़खड़ा गई। श्रीलंकाई गेंदबाजों ने अच्छी वापसी की। क्योंकि टीम इंडिया ने 54 रन के अंतराल पर अगले चार विकेट गंवाए।

भारत ने नहीं लिया कप तो मैदान से चले गये नकवी

दुबई। भारतीय टीम आधिकारिक पुरस्कार समारोह में शामिल ही नहीं हुई और एशियाई क्रिकेट परिषद के अध्यक्ष मोहसिन नकवी से ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया। महिला एशिया कप फाइनल खत्म होने के बाद ट्रॉफी प्रेजेंटेशन शुरू होने में आधे घंटे से ज्यादा का समय लग गया। इस दौरान भारतीय खिलाड़ियों ने मैदान पर एक साथ बैठक की। इसके बाद भारतीय टीम को मैदान से निकलकर ड्रेसिंग रूम की ओर जाते हुए देखा गया। खिलाड़ी फिर प्रेजेंटेशन सेरेमनी के लिए मैदान पर नहीं लौटीं। इस बार भी टीम ने नकवी के हाथों ट्रॉफी स्वीकार करने के बजाय समारोह से दूरी बनाए रखी। भारतीय टीम मैदान पर ही नहीं लौटी और नकवी भी श्रीलंका के पुरस्कार समारोह के बाद स्टेडियम से निकल गए। इस वजह से महिला एशिया कप की विजेता ट्रॉफी भी भारतीय खिलाड़ियों को मंच पर नहीं सौंपी जा सकी।

सहिया की व्यथा प्रेस कॉन्फ्रेंस से अदालत तक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। संजय शर्मा ने सेंसर बोर्ड के फैसले के खिलाफ मुंबई में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर खुलकर सवाल उठाया था। क्या आदिवासियों की पीड़ा दिखाना नक्सलवाद का समर्थन है? उन्होंने कहा था कि 'सहिया' हिंसा के समर्थन की फिल्म नहीं, बल्कि हिंसा के खिलाफ प्रेम की कहानी है। अब कपिल सिब्बल द्वारा पूरी फिल्म देखने और उसके बाद फिल्म के पक्ष में इतनी स्पष्ट राय रखने के बाद यह विवाद एक नए चरण में प्रवेश कर गया है। संजय शर्मा अब सेंसर बोर्ड के फैसले और आगे की प्रक्रिया को अदालत में चुनौती देने की तैयारी कर रहे हैं।

संजय शर्मा ने सेंसर बोर्ड से कहा था- आपत्ति है तो बताइए

इस मुकदमे का सबसे बड़ा कानूनी सवाल संभवत: यही होगा कि किसी हिंसा या सामाजिक बुराई को पर्दे पर दिखाना क्या उसका समर्थन करना माना जा सकता है? 'सहिया' की कानूनी तैयारी में सुप्रीम कोर्ट के एस. रंगराजन बनाम पी. जगजीवन राम और बॉबी आर्ट इंटरनेशनल बनाम ओमपाल सिंह हून जैसे महत्वपूर्ण फैसलों का सहारा लिया गया है। बॉबी आर्ट मामले से जुड़ा महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि किसी सामाजिक बुराई का चित्रण अपने आप उस बुराई का अनुमोदन नहीं बन जाता. किसी रचना को उसके पूरे संदर्भ और संदेश में देखा जाना चाहिए।

कपिल सिब्बल के साथ अदालत की लड़ाई

अब संजय शर्मा इस मामले को अदालत में ले जाने जा रहे हैं और कपिल सिब्बल ने फिल्म देखने के बाद इस कानूनी लड़ाई में जाने की बात कही है।अदालत में सेंसर बोर्ड के फैसले को रद्द करने, फिल्म पर तत्काल और निष्पक्ष पुनर्विचार कराने तथा यदि कोई वास्तविक आपत्तिजनक हिस्सा है तो उसे स्पष्ट रूप से चिन्हित करने जैसी राहतें मांगी जा सकती हैं। कानूनी तैयारी में यह विकल्प भी रखा गया है कि पूरी फिल्म रोकने के बजाय यदि आवश्यक हो तो सीमित और कानूनसम्मत संशोधनों के साथ प्रमाणन पर विचार किया जाए। लेकिन कपिल सिब्बल द्वारा पूरी फिल्म देखने के बाद दी गई राय ने निर्माता पक्ष के आत्मविश्वास को और बढ़ा दिया है।

स्पष्ट मत

यह बेहद शानदार फिल्म है। इसमें एक भी ऐसा सीन नहीं है जिसे आपत्तिजनक कहा जाए। मैं हैरान हूं कि इसे रोका गया। सरकार को तो इस फिल्म को अवॉर्ड देना चाहिए। इसे हम अदालत में ले जाएंगे और फिल्म हर हालत में रिलीज होगी।

अब लड़ाई सिर्फ 'सहिया' की नहीं

'सहिया' का विवाद अब सिर्फ एक निर्माता की फिल्म रिलीज कराने की लड़ाई नहीं रह गया है। यह सवाल भारतीय सिनेमा में रचनात्मक स्वतंत्रता, सेंसर बोर्ड की शक्तियों, प्रमाणन प्रक्रिया की जवाबदेही और असहमति की जगह से जुड़ गया है.एक तरफ सेंसर बोर्ड है, जिसने फिल्म को राष्ट्रीय अखंडता, राज्य की सुरक्षा और सार्वजनिक व्यवस्था जैसे बेहद गंभीर आधारों से जोड़ते हुए प्रमाणपत्र देने से इनकार किया। दूसरी तरफ फिल्म निर्माता संजय शर्मा हैं, जो पूछ रहे हैं कि आखिर फिल्म का वह दृश्य तो बताया जाए जो इन आरोपों को साबित करता है। और अब तीसरी तरफ कपिल सिब्बल हैं, जिन्होंने खुद पूरी फिल्म देखने के बाद कहा है कि उन्हें उसमें एक भी आपत्तिजनक दृश्य नजर नहीं आया। 23 अगस्त के अंतिम प्रत्यावेदन के बाद प्रक्रिया में हुई देरी ने इस लड़ाई में एक और सवाल जोड़ दिया है।

अब जवाब सेंसर बोर्ड से अदालत मांगेगी

अदालत के सामने मूल सवाल शायद यही होगा-जिस फिल्म को सेंसर बोर्ड ने रोक दिया, उसी फिल्म को पूरी देखने के बाद देश के वरिष्ठ संवैधानिक वकील कपिल सिब्बल अगर यह कह रहे हैं कि इसे रोकना नहीं, अवॉर्ड देना चाहिए, तो आखिर 'सहिया' का अपराध क्या है?

इसी तरह बॉम्बे हाई कोर्ट के फैंटम फिल्म्स बनाम सीबीएफसी मामले में फिल्म की प्रकृति, विषयवस्तु और मूल कथानक को ध्यान में रखकर देखने तथा दृश्यों को कहानी से अलग करके न आंकने की अहमियत सामने आई थी।

आखिर 'सहिया' में है क्या?

'सहिया' मूल रूप से नक्सल प्रभावित झारखंड की पृष्ठभूमि में बनी प्रेम कहानी है इसमें एक नवविवाहित जोड़ा ऐसी परिस्थितियों में फंस जाता है जहां एक तरफ नक्सली हिंसा है और दूसरी तरफ पुलिस तथा सुरक्षा व्यवस्था. एक पत्रकार की गलत रिपोर्टिंग भी कहानी में महत्वपूर्ण मोड़ लाती है। शादी की रात से शुरू हुआ संकट नवविवाहित जोड़े को ऐसे संघर्ष में धकेल देता है जहां दोनों को अपनी जान बचाते हुए निकलना पड़ता है. लेकिन इसी भय, हिंसा और असुरक्षा के बीच दोनों का रिश्ता और प्रेम मजबूत होता जाता है। निर्माता संजय शर्मा का कहना है कि फिल्म का विषय नक्सलवाद का समर्थन करना नहीं है. फिल्म सवाल उठाती है कि जब राज्य और राज्य-विरोधी हिंसा आमने-सामने खड़ी होती हैं तो उनके बीच फंसे सामान्य आदिवासी और नागरिक का क्या होता है।

यही 'सहिया' की आत्मा है

संजय शर्मा की ओर से सेंसर बोर्ड को दिए गए प्रत्यावेदन में स्पष्ट किया गया कि फिल्म न तो हिंसा का महिमामंडन करती है, न राष्ट्रविरोधी भावना पैदा करने का उसका कोई उद्देश्य है और न ही वह आदिवासी समाज को राष्ट्रविरोधी बताती है। इतना ही नहीं, निर्माता पक्ष ने बोर्ड से यह भी कहा कि अगर किसी निश्चित दृश्य या संवाद को लेकर वास्तविक आपत्ति है तो उसे स्पष्ट किया जाए। निर्माता उचित कट, संशोधन या डिस्क्लेमर जैसे उपायों पर विचार करने को तैयार था। इसके बावजूद पूरी फिल्म को प्रमाणपत्र देने से इनकार किया गया। यहीं संजय शर्मा का सवाल है- जब समस्या किसी खास दृश्य में है तो उस दृश्य को बताइए। पूरी फिल्म पर ताला क्यों?

म्युनिसिपल को-ऑपरेटिव सोसायटी के सचिव ने किया गोलमाल

हेरफेर करने के गंभीर आरोप, नियुक्ति से लेकर ऋण वितरण तक जांच की मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। नगर निगम लखनऊ की म्युनिसिपल को-ऑपरेटिव सोसायटी के सचिव नवीन गौड़ के खिलाफ नियुक्ति की योग्यता, ऋण वितरण में कथित अनियमितताओं, कर्मचारियों की शेयर मनी के कथित दुरुपयोग और शिकायतकर्ताओं पर दबाव बनाने जैसे गंभीर आरोप लगाए गए हैं। शिकायतकर्ताओं राहुल वाल्मीकि ने पूरे मामले की उच्चस्तरीय एवं निष्पक्ष जांच कराए जाने की मांग की है।

शिकायत में आरोप लगाया गया है कि नवीन गौड़ की वर्ष 18 में सहायक लेखाकार के पद पर नियुक्ति हुई थी। शिकायतकर्ताओं का दावा है कि संबंधित पद के लिए बी.कॉम तथा निर्धारित अनुभव की आवश्यकता थी, जबकि नियुक्ति के समय उनकी शैक्षिक योग्यता केवल इंटरमीडिएट थी। आरोप है कि नियुक्ति के दौरान महत्वपूर्ण तथ्यों को छिपाकर नियुक्ति हासिल की गई। हालांकि, इन आरोपों की आधिकारिक पुष्टि जांच के बाद ही हो सकेगी।

2023 से सचिव का कार्यभार संभालने का दावा

शिकायत के मुताबिक नवीन गौड़ वर्ष 2023 से समिति के सचिव का कार्यभार देख रहे हैं। इसी अवधि में समिति में सफाई कर्मचारियों को दिए जाने वाले ऋण को लेकर कई गंभीर शिकायतें सामने आने का दावा किया गया है। शिकायतकर्ताओं का आरोप है कि कुछ कर्मचारियों के नाम पर उनकी जानकारी अथवा सहमति के बिना ऋण स्वीकृत किए गए और ऋण की रकम अन्य खातों में स्थानांतरित की गई। इसके अलावा ऋण के समय कर्मचारियों से जमा कराई जाने वाली शेयर मनी में भी कथित अनियमितता का आरोप लगाया गया है।

दिवंगत सफाई कर्मचारी विकास के मामले में गंभीर आरोप

शिकायत में स्वर्गीय विकास पुत्र बंसी लाल, जो सफाई कर्मचारी के मामले को भी उठाया गया है। आरोप है कि विकास की जानकारी के बिना उसके नाम पर ऋण स्वीकृत कर रकम निकाली गई। शिकायतकर्ता के अनुसार उस समय विकास दुर्घटना में घायल था और उसके पैर में फ्रैक्चर होने के कारण सरकारी अस्पताल में उपचार चल रहा था। आरोप है कि इसी दौरान उसके नाम पर ऋण कराकर रकम निकाल ली गई।शिकायत के मुताबिक विकास ने मामले की जांच के लिए प्रार्थना पत्र दिया था। आरोप है कि इसके बाद उस पर कथित रूप से दबाव बनाया गया और जान से मारने की धमकी दी गई, जिसके चलते उसे घर छोड़कर शहर में छिपकर रहने की स्थिति पैदा हुई। शिकायतकर्ताओं का दावा है कि मानसिक तनाव के बाद विकास की मृत्यु हो गई। हालांकि, विकास की मृत्यु और कथित धमकियों के बीच संबंध की स्वतंत्र पुष्टि जांच के बाद ही संभव होगी।

कमलेश के नाम पर भी बिना जानकारी ऋण स्वीकृत करने का आरोप

इसी प्रकार कमलेश पुत्री शिव कुमार, जिन्हें भी सफाई कर्मचारी बताया गया है, के संबंध में आरोप लगाया गया है कि उनकी जानकारी के बिना ऋण स्वीकृत कर खाते से रकम निकाली गई। शिकायतकर्ताओं के मुताबिक वेतन से अधिक कटौती होने के बाद कमलेश को अपने नाम पर ऋण होने की जानकारी हुई, जबकि उन्होंने ऋण के लिए आवेदन नहीं किया था। आरोप है कि शिकायत के बाद उन पर भी दबाव बनाया गया और धमकी दी गई। शिकायत में दावा किया गया है कि लगातार मानसिक तनाव और आर्थिक परेशानी के कारण उनकी तबीयत गंभीर रूप से खराब हुई और बाद में उनकी मृत्यु हो गई। इन आरोपों की भी स्वतंत्र जांच और दस्तावेजी साक्ष्यों के आधार पर पुष्टि आवश्यक है।

शिकायतों पर कार्रवाई की मांग

शिकायतकर्ताओं के अनुसार मामले को लेकर मुख्यमंत्री कार्यालय, नगर आयुक्त, सहकारिता विभाग, जिला सहकारी बैंक की हलवासिया शाखा तथा सहकारिता भवन स्थित आयुक्त एवं निबंधक सहकारी समितियां, उत्तर प्रदेश समेत विभिन्न स्तरों पर शिकायतें की गई हैं। साथ ही जिन कर्मचारियों ने धमकी या दबाव बनाए जाने के आरोप लगाए हैं, उनके बयान दर्ज कर संबंधित बैंक लेनदेन और समिति के दस्तावेजों की फॉरेंसिक जांच कराने की मांग की गई है।

मुरादाबाद में इंटरनेशनल फर्म में लगी भीषण आग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुरादाबाद। कटघर क्षेत्र के रामपुरदोराहा इलाके में गोट रोड पर स्थित आरएच इंटरनेशनल फर्म में सोमवार अचानक आग लग गई। जिस समय आग लगी फैक्ट्री के सैकड़ों कर्मचारी अपने काम में लगे थे। फैक्ट्री के एक हिस्से से धुआं उठते ही अफरा-तफरी मच गई। सारे कर्मचारी भाग कर किसी तरह बाहर निकले।

आनन-फानन में पुलिस और दमकल विभाग को आग की सूचना दी गई। तब तक आग ने विकराल रूप लेकर पूरी फैक्ट्री को अपने चपेट में ले लिया। आग की ऊंची-ऊंची लपटे उठने लगी। दमकल की चार गाड़ी करीब-करीब आधे घंटे की मशक्कत के बाद भी आग पर काबू नहीं पा सकी। बाद में 6 गाड़ियां और बुलाई गई दो घंटे बीतने के बाद भी आग पर काबू नहीं पाया जा सका। दमकलकर्मी आग बुझाने में जुटे रहे। सीएफओ डॉ. राजीव कुमार पांडेय ने बताया कि दमकल की दस गाड़ियां लगाई गई हैं।

दिशा सालियान की मौत मामले में सीबीआई ने कराई एफआईआर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। बॉम्बे हाई कोर्ट के आदेश पर सेंट्रल ब्यूरो ऑफ़ इन्वेस्टिगेशन ने सोमवार को दिशा सालियन मामले की गहन जांच के लिए एफआईआर दर्ज की।

यह घटनाक्रम सुशांत सिंह राजपूत की मैनेजर की छत से गिरने के बाद संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत के बाद सामने आया है। अब सीबीआई पूरे मामले की जांच करेगी। ध्यान देने वाली बात है कि सालियन 8 जून, 2020 को मृत पाई गई थीं, जो मुंबई के बांद्रा में राजपूत के घर पर उनके मृत पाए जाने से कुछ दिन पहले की घटना है।

गौरतलब है कि उनकी मौत को शुरू में एक्सीडेंटल डेथ रिपोर्ट के तौर पर दर्ज किया गया था। हाल ही में, बॉम्बे हाई कोर्ट ने सीबीआई को एफआईआर दर्ज करने और सालियन की मौत से जुड़े हालात की जांच करने का निर्देश दिया था।

नगर निकाय चुनाव में कांग्रेस ने दिया भाजपा को दिया झटका

» वसुंधरा राजे के गढ़ झालावाड़ में कांग्रेस की नगर परिषद पर दर्ज की एकतरफा जीत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। राजस्थान नगर निकाय चुनाव के नतीजे धीरे-धीरे आने लगे हैं। सुबह 8.00 बजे से मतों की गिनती जारी है और दोपहर तक नतीजे साफ होने लगेंगे। शुरुआती रूझान में कांग्रेस से भाजपा को कड़ी टक्कर मिल रही है। कई सीटों पर एनडीए पर इंडिया गठबंधन हावी है।

भाजपा के कई दिग्गज नेताओं के क्षेत्र

में कांग्रेस ने बाजी मार ली है तो कही आप व अन्य विपक्षी दलों ने कामयाबी हासिल की है। हालांकि भाजपा ने बढ़त ली हुई है। कांग्रेस ने सबसे बड़ा झटका वसुंधरा राजे को दिया है। उनके चुनाव क्षेत्र झालावाड़ में बीजेपी की हार हुई है। भरतपुर नगर निगम के चुनाव में निर्दलियों ने बाजी मारी जबकि दौसा नगर निगम के 55 में से 25 वार्ड पर जीती कांग्रेस। कुल मिला कर राजस्थान निकाय चुनाव के 1012 वार्डों पर कांग्रेस की जीत, 1193 पर बीजेपी विजयी है। उदयपुर नगर निगम चुनाव में बीजेपी की बड़ी जीत हुई है। बीजेपी ने 41 सीटों पर बंपर जीत के साथ प्रचंड बहुमत का आंकड़ा पार किया है जबकि 17 सीटों पर कांग्रेस को जीत मिली है। वहीं, एक सीट पर निर्दलीय प्रत्याशी विजयी हुए हैं। 45 वार्डों वाली इस नगर परिषद में कांग्रेस ने 29 सीटों पर परचम लहराकर अपना बोर्ड बनाना तय कर लिया है।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। **विधि सलाहकार**: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी **4 पीएम** न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा**
द्वारा **आस्था प्रिंटर्स**, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **संपादक- संजय शर्मा**